।। ओ३म् ।।

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2011-13
दयानन्दाब्द १८९,
शक सं. १९३४,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११३

वर्ष-11 अंक-23 फाल्गुन शु. 5 से चैत्र कृ. 4 सं. २०६९ वि. / 16 से 31 मार्च 2013 / अमरोहा, उ.प्र. पृ.-12 प्रति- 5/-

केरल में पं. गुरुदत्त विद्यार्थी स्मारक
वैदिक गवेषण ग्रंथालय स्थापित

बेल्लिनेली (केरल)। आर्यसमाज के नेतृत्व में शिवरात्रि के दिन पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी स्मारक वैदिक गवेषण ग्रन्थालय का शुभारम्भ हुआ। विख्यात संस्कृत विद्वान डो. पि. के. माधवन ने ऋषि बोधोत्सव के शुभावसर पर इस ग्रन्थालय का उद्घाटन किया। ओएन दामोदरन नांबूतिरिपाड की अध्यक्षता में हुए इस कार्यक्रम में आर्यसमाज बेल्लिनेली के प्रधान वि. गोविन्द दास, कार्यदर्शी के. एम. राजन सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य श्रीधर शर्मा, वी.एन. शंकर नारायण, बी. राम कृष्णन आदि प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। इस ग्रन्थालय में आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द कृत वैदिक साहित्य तथा विभिन्न भाषाओं में प्रचारित वैदिक पत्रिकाएं भी जिज्ञासुओं को अध्ययन के लिए उपलब्ध रहेंगी। प्रातःकालीन बेला में यज्ञ के साथ ही ऋषिवर दयानन्द के उपकारों को भावपूर्ण स्मरण किया गया। श्रीधर शर्मा ने अपने मुख्य भाषण में महर्षि दयानन्द के आदर्शों पर चलने का आहवान किया। आर्यसमाज की ओर से केंसर से पीढ़ित जयप्रकाश को चिकित्सा सहायता राशि भेंट की गयी। श्रद्धालुओं को जीवनोपयोगी वैदिक साहित्य भी भेंट स्वरूप दिया गया।

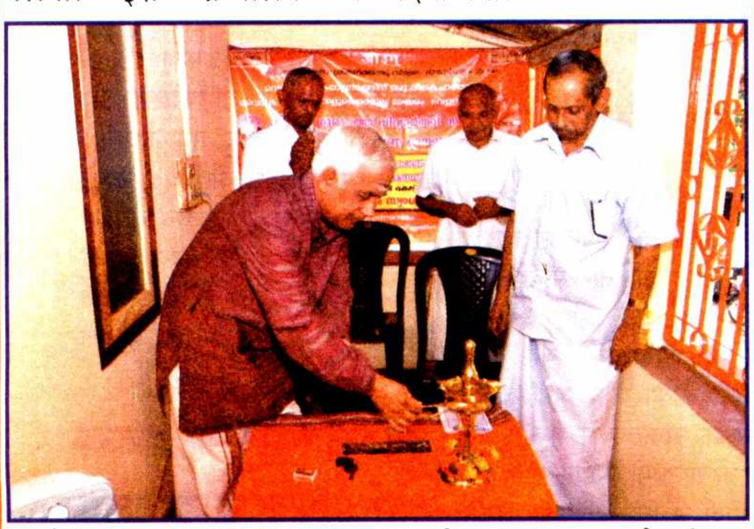

वैदिक ग्रंथालय का उद्घाटन करते अतिथिगण- केसरी।

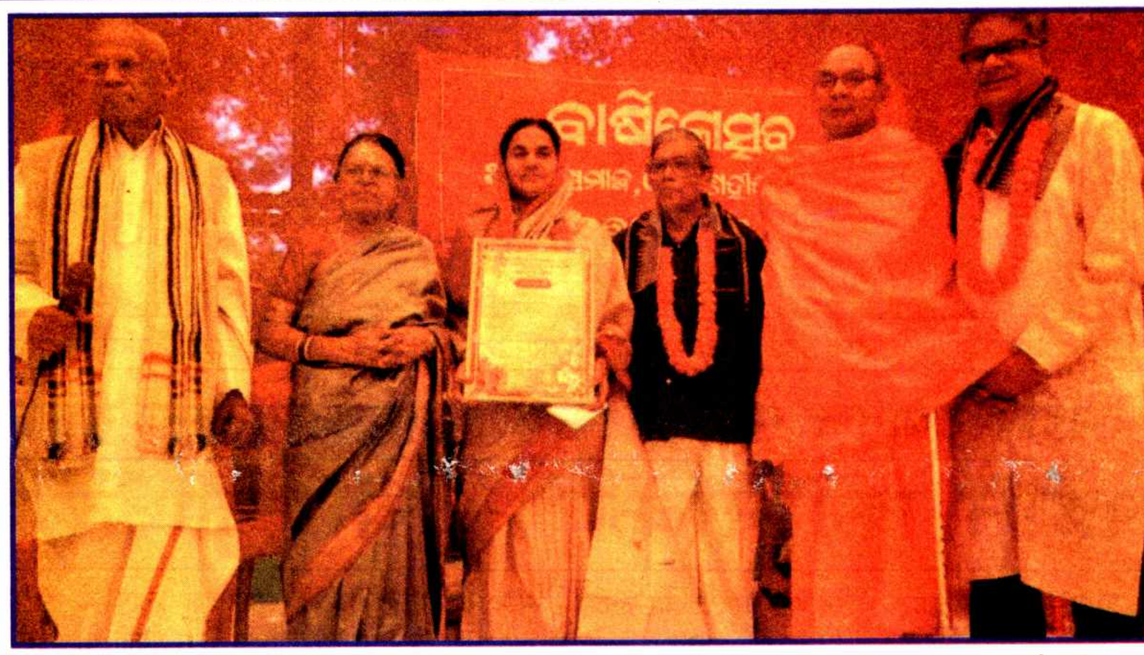

गुरुकुल चोटीपुरा (अमरोहा) की आचार्या डॉ. सुमेधा जी के सम्मान का एक दृश्य- केसरी।

श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल, चोटीपुरा की आचार्या डॉ. सुमेधा
शन्नोदेवी राष्ट्रीय वेद-वेदांग पुरस्कार से सम्मानित

कल्पना आर्या
भुवनेश्वर (उड़ीसा)

फरवरी २०१३ में आयोजित आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव समारोह पर १० फरवरी को श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा की विदुषी एवं यशस्विनी आचार्या डॉ. सुमेधा जी को पं. लिंगराज अग्निहोत्री की स्मृति समिति के सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया। आचार्या जी को शॉल, अभिनन्दन पत्र व १५ हजार रुपये की धनराशि भेंट की गयी। उड़ीसा राज्य के प्रसिद्ध साहित्यकार, समाजसेवी एवं आर्यसमाज भुवनेश्वर के संस्थापक डा. प्रियव्रत दास इस कार्यक्रम के प्रमुख सुत्रधार व संयोजक थे तथा सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि आर्य विभूषण पूर्व आईएएस सीताकांत एवं प्रसिद्ध हृदय रोग चिकित्सक कविप्रसाद मिश्रा थे।

वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता के रुप में आचार्या डा. सुमेधा जी ने मानव के लिए यज्ञ की अनिवार्यता, अघतन शिक्षा में वैदिक एवं गुरुकुल-शिक्षा की आवश्यकता तथा नारी के समुज्जवल व तेजस्वी स्वरुप को अपने वक्तव्य में प्रस्तुत करते हुए कहा कि यह सम्मान मेरा नहीं, अपितु गुरुकुल शिक्षा पद्धति का है। मै यह सम्मान देव दयानंद सरस्वती को समर्पित करती हूँ। प्राचार्या जी ने कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही देश का सर्वांगीण विकास हो सकता है। भुवनेश्वर के समाज व संगठन आदि प्रमुख समाचार पत्रों में भी सम्मान कार्यक्रम प्रकाशित किया गया।

नवसंवत्सर, आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ पर
भव्य स्मारिका का प्रकाशन

महोदय/महोदया,

आपको जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज स्थापना दिवस, नव सम्वत्सर तथा आर्यावर्त केसरी की ११वीं वर्षगांठ के पावन उपलक्ष्य में आर्यावर्त केसरी द्वारा एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०७० विक्रमी तदनुसार दिनांक ११ अप्रैल २०१३ को किया जायेगा जो एक ऐतिहासिक, स्मरणीय तथा संग्रहणीय अंक होगा। दो वर्ष पूर्व भी आर्यावर्त केसरी द्वारा इस उपलक्ष्य में एक भव्य विशेषांक का प्रकाशन किया गया था जिसकी सभी आर्यजनों व संस्थाओं द्वारा मुक्त कंठ से सराहना की गयी। श्रद्धेय विद्वानों, मनीषियों, लेखकों व विज्ञ पाठकों से रचनाएं आमंत्रित हैं। साथ ही विज्ञापनदाताओं से अनुरोध है कि वे इस प्रकाशन यज्ञ में अपनी सहयोग रूपी आहुति प्रदान कर अनुग्रहीत करें। कृपया पाठकगण और संस्थाएं अपना आदेश भी अभी से अंकित करा दें कि उन्हें कितनी प्रतियां चाहिए। एक प्रति का मूल्य- 25/- मात्र रहेगा। धन्यवाद,

– डॉ. अशोक कुमार आर्य, सम्पादक- आर्यावर्त केसरी
आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221
उत्तर प्रदेश (मोबा. 09412139333, 08273236003)

धर्म का मूल है वेद तथा वेद का परमात्मा
स्त्री आर्यसमाज का शताब्दी समारोह सम्पन्न

सुमन कुमार 'वैदिक'
मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज मण्डी बांस की स्त्री आर्यसमाज का शताब्दी समारोह १७ से १९ फरवरी तक बड़े ही उत्साह के साथ मण्डी बांस स्थित चूं-चूं वाली धर्मशाला में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य डॉ. ज्वलंत शास्त्री ने आर्यजगत के महान विद्वान एवं प्रचारक राजा जयकृष्ण का परिचय देते हुए कहा कि उनकी प्रेरणा से महर्षि दयानंद ने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। इसके पश्चात् उन्होंने आर्यसमाज के प्रथम नियम की व्याख्या करते हुए कहा कि सब सत्य विद्या और ब्रह्माण्ड मनुष्य का मूल निर्माता परमात्मा ही है। द्वितीय सभा में विद्वान वैदिक प्रवक्ता डॉ. शास्त्री ने अपनी चर्चा में कहा कि आज धर्म के क्षेत्र में सबसे अधिक भ्रान्ति ईश्वर को लेकर है। यह भ्रान्ति वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थों के स्वाध्याय छोड़ने तथा आधुनिक काल के ग्रन्थों के कारण उत्पन्न हुई है। आर्यसमाज के दूसरे नियम में ईश्वर क्या है, कैसा है, स्पष्ट किया गया है। आर्यसमाज में परिवार सहित जाने से बच्चों को वेदमंत्र याद हो जाते हैं। ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त तक ऋषि परंपरा चली, इसके पश्चात मुनी, सन्यासी तो हुए किन्तु कोई योगी और वेद विद्या का पण्डित नहीं हुआ। महर्षि दयानंद ने ईश्वर सर्वशक्तिमान है का अर्थ यह किया कि परमात्मा को किसी कार्य करने में सहायक की आवश्यकता नहीं है। परमात्मा सृष्टि की रचना के लिए किसी की मदद नहीं लेता। इसके लिए किसी गवाह, वकील की आवश्यकता नहीं होती। उनसे शास्त्रार्थ करने वाले मौलवी ने कहा कि परमात्मा जो चाहे कर सकता है। तब स्वामी दयानंद ने पूछा क्या परमात्मा अपने को मार सकता है? क्या परमात्मा ऐसा पदार्थ बना सकता है, जिसे वह उठा न सके। जीवात्मा को अल्पज्ञ होने से सहायक की आवश्यकता रहती है। एक शास्त्रार्थ में स्वामी दयानंद ने पौराणिकों से वेद के प्रमाण मांगे तो उन्होंने कहा कि वेद को शंकासुर ले गया है।

शेष पृष्ठ १० पर.....

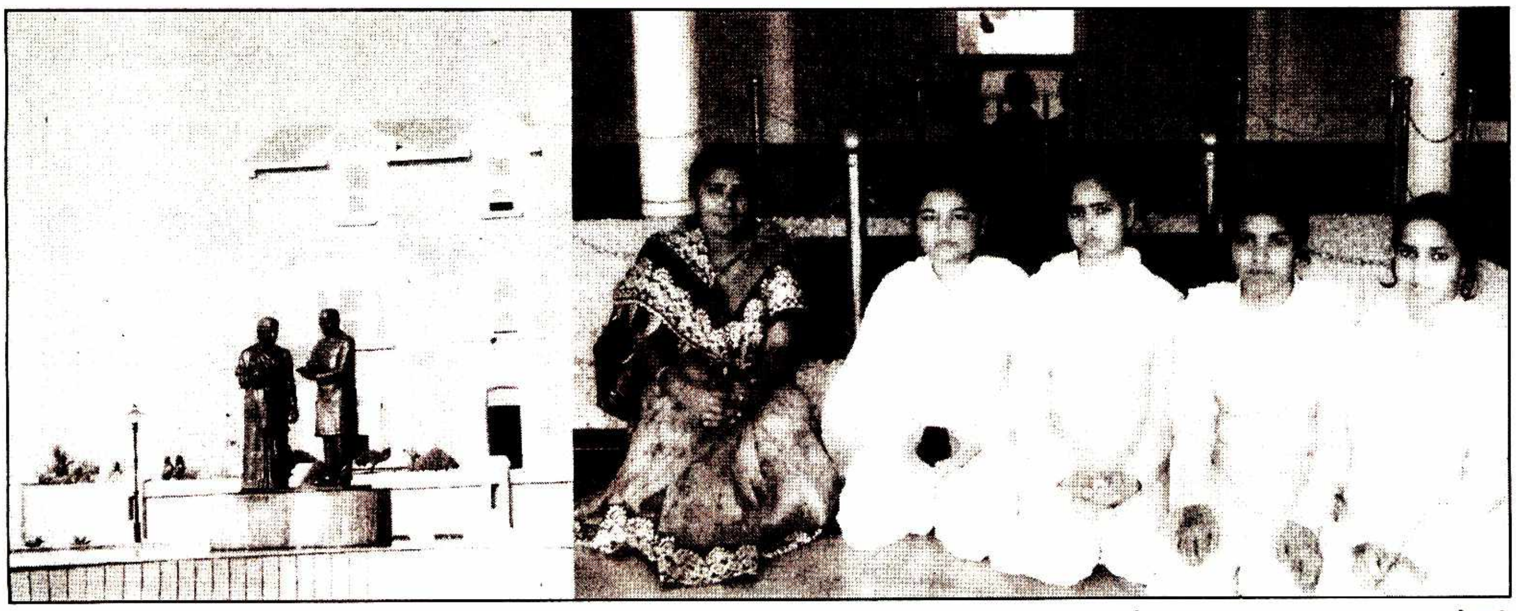

मांडवी कच्छ स्थित श्यामजी कृष्ण वर्मा का इंडिया हाउस स्मारक, भवन में उपस्थित आचार्या प्रियंवदा वेदभारती व ब्रह्मचारिणियां- केसरी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिष्य एवं स्वतंत्रता संग्राम के नायक

महान क्रान्तिकारी श्यामजी कृष्ण वर्मा

सुमन कुमार वैदिक

जब मनुष्य संकुचित सीमित क्षेत्र से बाहर निकल कर किसी महापुरुष के कार्य का अवलोकन करता है तो पाता है कि यह विश्व कितने विविध विचित्रताओं से व्याप्त है। किसी महापुरूष, उससे सम्बन्धित घटनाएं वस्तु या दृश्य के बारे में सुनने और इससे प्रत्यक्षत: देखने में बड़ा अन्तर है, जो अनुभूति किसी दृश्य या घटना को देखने में होती है। वह किसी काल्पित माध्यम से ज्ञात नहीं हो सकती। आर्ष कन्या गुरुकुल, नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेद भारती ने अहमदाबाद सैटेलाइट आर्य समाज में महर्षि दयानन्द के मानस सपुत्र श्याम कृष्ण वर्मा के स्मारक की चर्चा सुनी, तो उसे देखने गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां द्रिव्या, आरुषी द्योषा, गार्गी के साथ देखने जा पहुंची। आर्यसमाज काकरिया के पुरुषार्थी पुरोहित पं. दिवाकर शास्त्री की प्रेरणा से गुजरात सरकार के मुख्यमंत्री नेरन्द्र मोदी जिनेवा जाकर महर्षि दयानन्द के मानस पुत्र, क्रान्तिकारियों के मार्ग दर्शक श्याम कृष्ण वर्मा की अस्थियों को भारत लाकर उनकी जन्मस्थली मौरवी (कच्छ) जिले के माण्डवी कस्बे में एक भव्य समारक का निर्माण कर मौरवी जनपद में टंकारा के बाद एक और आर्यो को तीर्थ दे दिया। भारतीय स्वतन्त्रता के लिए प्रयत्नशील क्रान्तिकारियों को ब्रिटेन में जाकर प्रेरणा देने वाले श्याम कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को माण्डवी के धनाढ्य परिवार में हुआ था। युवा अवस्था में ही महर्षि दयानन्द ने इनके हृदय में देशोंनति की भावना उत्पन्न की। उनकी प्रेरणा से विश्व विख्यात ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत, हिन्दी, गुजराती के अध्यापन के साथ बार एटला की उपाधि लेने वाले प्रथम भारतीय होने पर रतलाम, उदयपुर और जूनागढ़ रियासतों के दीवान रहे। किन्तु रजवाड़ों की स्वतन्त्रता के प्रति रूचि न देखकर यह पुन: लन्दन चले गये जहाँ हाईगेट के पास एक भवन खरीदा जिसका नाम इण्डिया हाऊस रख, उसके द्वार सभी भारत से आने वालों के रहने के लिए खोल दिये। भारत से विद्याध्ययन हेतु आने वाले को स्वामी दयानन्द हरवर्ट स्पेनसर, छत्रपति शिवाजी, और महाराणा प्रताप के नाम पर छात्रवृत्तियां देकर पढ़ाते थे। इण्डिया सोशियोलोजिस्ट समाचार पत्र इण्डिया हाउस से प्रकाशित किया। विनायक दामोदर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा जैसे नवयुवकों को प्रेरणा दे, क्रान्तिकारी बनाने वाले श्यामकृष्ण वर्मा ने बम बनाने का नुस्खा नाम से पुस्तक छापी, तथा बम बनाने की विधि भारत भेजी। खुदीराम बोस जैसे क्रान्तिकारियों ने उसी से बम बनाना सीखा, तथा अंग्रेजों पर बम से आक्रमण करने का श्रीगणेश किया। मदनलाल धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को गोली मारने से इण्डिया हाउस की गतिविधियों पर सरकार की दृष्टि पहुंची। उससे पूर्व कि अंग्रेज सरकार श्यामजी कृष्ण वर्मा को गिरफ्तार करती, वह पहले फ्रांस, और फिर जेनेवा चले गये, जहां से उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी गतिविधियां जारी रखीं। 31 मार्च 1930 को जेनेवा में इनका देहान्त हो गया।

महर्षि दयानन्द जब मेरठ में थे, तब उन्होंने एक पत्र संस्कृत में श्याम जी कृष्ण वर्मा को भेजा था जो लन्दन के प्रसिद्ध समाचार-पत्र में 23 अक्टूबर 1880 में इस टिप्पणी के साथ छपा था कि "एक हिन्दू क्षत्रिय नवयुवक, जिसका नाम श्यामजी कृष्ण वर्मा है, जिसकी संस्कृत भाषा में उत्तम योग्यता है, जिसने एक जगत-प्रसिद्ध व्यक्ति से शिक्षा पायी है, जो संस्कृत भाषा का ज्ञाता है, और जिसने अद्वैत, नास्तिकता और मूर्तिपूजा के खण्डन द्वारा आर्यावर्त के समस्त धार्मिक सम्प्रदायों में बड़ी हलचल उत्पन्न कर दी है।"

ऐसे स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा की अस्थियां 1930 से जेनेवा में थीं, किंतु न तो सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा को, और न भारत सरकार को चिन्ता थी। यह कार्य आर्यसमाज काकरियां के पुरोहित पं0 दिवाकर के संकल्प से पूर्ण हुआ। गुजरात के राष्ट्रप्रेमी, महान मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक इण्डिया हाउस श्यामजी कृष्ण वर्मा एवं उनकी पत्नी की आदमकद प्रतिमा, उनके पत्रों का संग्रह, स्वामी दयानन्द की संगमरमर प्रतिमा तथा उनके अस्थियों के अवशेष संग्रह बनाकर आर्यजगत पर एक बहुत बड़ा कार्य किया है, जिसे प्रत्येक को देखना चाहिए।

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ आयोजित

सुमन कुमार वैदिक
फरीदकोट।

आर्य समाज मन्दिर मेन बाजार फरीदकोट द्वारा प्रथम बार विशाल स्तर पर वार्षिकोत्सव पर चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ का आयोजन 28 से 30 दिसम्बर तक मनाया गया। आर्य समाज पर दीपमालिका लगायी गयी। आचार्य सुनील दत्त शास्त्री द्वारा यज्ञ के ब्रह्मा पद के दायित्व का निर्वाह कर यज्ञ को पूर्ण कराया। यज्ञ के पश्चात् अपने उद्‌बोधन में आर्य जगत के विद्वान ने स्त्रीशिक्षा के महत्व पर कहा कि हमारे राष्ट्र में नारी को पूज्यनीय माना गया। जिस गृह में माता के नेत्रों से अश्रुपात होता है वह नारकीय बन जाता है। यज्ञोंपवीत के महत्व पर अपने उद्धबोधन में बहुत सारगर्भित विचार दिये, अन्तिम दिन देश भक्ति तथा शहिदों के उज्जवल इतिहास का वर्णन कर श्रोताओं का ज्ञानवर्द्धन किया। दिवाकर भारती मोगा ने भी अपने विचार दिये। भजनोपदेश सुरेन्द्र सिंह गुलशन के भजनों को लोगों ने बहुत प्रभावित किया। करतारपुर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन पं. कमलेश कुमार शास्त्री द्वारा कराया गया। मुख्य यज्ञमान पवन कुमार वर्मा थे। इस अवसर पर आगन्तुकों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। आर्य समाज के मन्त्री सतीश कुमार द्वारा सभी को धन्यवाद दिया गया।

सामवेद परायण यज्ञ सम्पन्न

कितरपुर (बिजनौर)/सतीश आर्य। 11 से 14 जनवरी तक चार दिवसीय सामदेव परायण यज्ञ का आयोजन आचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया। यज्ञ के पश्चात् अपने उद्‌बोधन में ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के शिष्य विद्वान आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण अर्थात् पृथ्वी की गति उत्तरायण होना प्रारम्भ होती है। मानव को भी अपने जीवन में उत्तरायण लाते हुए अन्धकार रुपी अज्ञान का त्याग करते हुए प्रकाश रुपी ज्ञान की ओर अग्रसर होना चाहिए। सामवेद के एक मन्त्र की व्याख्या करते हुए आचार्य ने कहा कि प्रभु तू आ और आकर मेरे द्वारा किये गये यज्ञ जैसे पवित्र कर्मों का फल दे। हमारे हृदय मन्दिर को अपनी ज्ञान ज्योति से आलोकित करने के लिए आप हमारे हृदय में विराजमान हो जाइऐ। आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक भीष्म ने सुमधुर भजनों की प्रस्तुति से मन मोह लिया। ब्रह्मचारी ऋषि और अंकुर भारद्वाज द्वारा वेद पाठ व यज्ञमान आकाशदीप दम्पत्ति रहे।

संक्षिप्त समाचार

शिविर आयोजित

मधुबनी (बिहार)। आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी जरैल के विशाल प्रांगण में 25 फरवरी से 3 मार्च तक आर्य वीर दल बिहार राज्य का प्रांतीय शिविर लगाया गया, जिसमें सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान स्वामी देवव्रत सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान राजसिंह आर्य एवं मंत्री विनय आर्य, आर्य वीर दल के वरिष्ठ शिक्षक हरिसिंह आर्य सहित बड़ी संख्या में आर्यगण पधारे।

वार्षिकोत्सव १६ से

सहारनपुर (उप्र)। आर्यसमाज खेड़ा अफगान का वार्षिकोत्सव 16 से 17 फरवरी तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा, आचार्य विष्णु मित्र वेदार्थी, भजनोपदेशक प्रताप सिंह आर्य एवं ओम प्रकाश वर्मा सहित महिला पुरुष व बच्चों ने सहभागिता की। इस अवसर पर गौरक्षकों को सम्मानित किया गया।

८३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिल्ली। आर्य समाज विरला लाइन्स का 83वां वार्षिकोत्सव 28 से 30 दिसम्बर तक मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य वेद प्रकार श्रत्रिय के ज्ञानवर्द्धन प्रवचन से तथा कुलदीप आर्य भजनोपदेशक के भजनों से जन मानस को लाभान्वित किया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य कुशल पाल शास्त्री रहे।

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित कार्यक्रम

- **11 से 17 अप्रैल, 2013 ध्यान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग अजमेर। सम्पर्क सूत्र- 09414006961**
- **17 से 26 मई, 2013** संस्कृत संभाषण शिविर सम्पर्क सूत्र- 09414709494
- **28 मई से 04 जून, 2013 आर्यवीर दल शिविर, सम्पर्क सूत्र- 099414436031**
- **06 से 13 जून, 2013 आर्य वीरांगना शिविर, सम्पर्क सूत्र- 09414436031**
- **16 से 23 जून, 2013 योग शिविर, सम्पर्क सूत्र- 0145-2460164**
- **26 से 30 जून, 2013 विद्वतगोष्ठी- आर्यसमाज की यज्ञ पद्धति (तृतीय) आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, नर्मदापुरम् होशंगाबाद।**

आर्यावर्त केसरी
१६ से ३१ मार्च २०१३

एक महान व्यक्तित्व हैं 'आर्यरत्न' महाशय धर्मपाल

डॉ. अशोक कुआर आर्य

महाशियां दी हट्टी लिमिटेट के स्वामी आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी, जिन्हें आज पूरा देश ही नहीं, वरन् पूरा विश्व मसाला-किंग के नाम से जानता है, निःसंदेह एक प्रेरक व्यक्तित्व हैं, जिन पर प्रत्येक व्यक्ति को गर्व होना चाहिए। एमडीएच के कीर्ति नगर स्थित कार्यालय में एक बड़े कमरे में बैडनुमा सोफे पर बेहद साधारण मूड में बिना आंखों पर चश्मा चढ़ाए, एक कागज पर बारीक-बारीक शब्दों में हिसाब-किताब लिखते हुए जब उनसे पूछा जाता है कि आप इस उम्र में भी बिना चश्मे के कैसे काम कर लेते हैं, तो मुस्कुराते हुए वे अपना मुंह खोलते हैं, और कहते है। कि कि इस उम्र में मेरे सारे दांत भी असली हैं और बिल्कुल सही-सलामत हैं। खैर उनके इस रहस्य के बारे में आगे विस्तार से जानेंगे, उससे पहले उनके बारे में एक और बात जान लेना बहुत दिलचस्प है जिसके बारे में बहुत कम लोगों को जानकारी होगी कि एक समय ऐसा भी था जब यही मसाला किंग महज १३-१४ साल की उम्र में नई दिल्ली में कुतुब रोड पर तांगा स्टैंड पर एक-एक सवारी के लिए जोर-जोर से आवाज लगाते थे, और कभी सवारी मिलती, तो कभी नहीं मिलती थी। हताश और निराश होकर वे सोचते थे कि मैं कभी बड़ा आदमी भी बन पाऊंगा, या तांगा ही चलाता रहूंगा। बस इसी एक ख्याल ने उन्हें अपने पुश्तैनी काम मसाला बनाने की ओर प्रेरित किया।

बचपन से ही महाशय जी ने बड़ा आदमी बनने का सपना तो संजो ही रखा था, क्योंकि वह हर वो काम कर सकते थे जिससे वह बड़ा आदमी बन सकें। हालांकि 15 साल की उम्र तक आते-आते उन्होंने कई काम बदले, यहां तक कि बढ़ईगीरी और कपड़ा व्यवसाय में भी भाग्य आजमाया, मगर किसी काम में मन नहीं लगता था आखिर घोड़ा तांगा बेचकर उन पैसों से अपना पुश्तैनी काम फिर से शुरु कर दिया। लिहाजा जेसे-जैसे पूंजी इकट्ठी होने लगी, वैसे-वैसे वह अपने पांव फैलाने लगे, इस तरह उनका कारोबार जोर पकड़ने लगा। वक्त बीतता गया और अनुभव भी बढ़ता गया। गुणवत्ता और शुद्धता की परखकर महाशय जी दिन दूनी-रात चौगुनी उन्नति करने लगे। आज 90 वर्ष की उम्र में भी महाशय जी खुद को बुजुर्ग की श्रेणी में नहीं मानते। मन और तन से हमेशा जवां महसूस करने वाले महाशय जी अत्यन्त मिलनसार और अपनी खुशमिजाजी और अनुशासनप्रियता के कारण जाने जाते हैं।

दिल्ली के जनकपुरी इलाके में माता चन्नन देवी अस्पताल जहां उन्होंने वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब के बुजुर्गों के लिए भी विशेष सुविधाएं दे रखी हैं। महाशय जी कहते हैं प्यार बांटते चलो और सफलता प्राप्त करनी है तो जो काम करें, उसे मालिक समझो, खुद को सेवक, ईमानदारी, मेहनत करना और सच बोलना ही जीवन में व्यक्ति को बड़ा बनाता है, फिर परमात्मा और माता-पिता के आशीर्वाद से ही व्यक्ति आगे बढ़ता है। आज मैं जो कुछ भी हूँ, माता-पिता के आशीर्वाद की बदौलत हूँ। महाशय जी बताते हैं कि जिस तरह पढ़ा-लिखा विद्वान नहीं होता, वैसे ही पैसे वाला धनवान नहीं होता। अगर सेहत नहीं तो पैसा किस काम का, मेरी नजर में सेहत है तो सब कुछ है।

महाशय जी का कहना है कि आप जितना दूसरों के लिए करेंगे, भगवान आपको उतना ही बरकत देगा। महाशय जी को भजन बहुत प्रिय हैं और 7 वर्ष की आयु से लेकर 70 साल तक की आयु तक वह रोजाना मंडली बुलाकर भजन गाया करते थे। आज गला साथ नहीं देता मगर गुनगुनाना नहीं भूलते।

महाशय जी द्वारा अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षिक प्रकल्प शुरु किये गये हैं। स्वास्थ्य संरक्षण के लिए जहां जनकपुरी, नई दिल्ली में 300 शैयाओं का मल्टी स्पेशलिटी तथा सुपर स्पेशलिटि हॉस्पिटल 'माता चन्नन देवी हॉस्पिटल' की स्थापना आपने की है, वहीं शैक्षिक क्षेत्र में एमडीएच इण्टरनेशनल स्कूल, जिसकी दो अलग-अलग शाखाएं द्वारिका व जनकपुरी में स्थापित हैं, तथा महाशय धर्मपाल विद्या मन्दिर सुभाषनगर भी अपना कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। इतना ही नहीं, वर्तमान में आपके योगदान से धनश्री (असम) में महाशय धर्मपाल (एमडीएच) दयानन्द आर्य विद्या निकेतन के विशाल भवन का निर्माण कार्य चल रहा है तथा 10 फरवरी को आर्यसमाज खजूरी खास, दिल्ली में महाशय धर्मपाल भवन का शिलान्यास हुआ है, और स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम परली बैजनाथ (बीड) महाराष्ट्र में महाशय धर्मपाल (एमडीएच) आर्य व्यास वानप्रस्थ आश्रम का उद्घाटन 24 फरवरी को किया गया है, जहां करोड़ों रुपये की लागत से भवन निर्माण जारी है।

महाशय जी की प्रेरणा व योगदान से ही लगभग 35 करोड़ रुपये की लागत से उदयपुर में महर्षि दयानन्द स्मारक स्तम्भ निर्माण की प्रक्रिया में है। इसी प्रकार अमरोहा जनपद के ग्राम चोटीपुरा स्थित श्रीमद्दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय में भी आपने लगभग 50 लाख रुपये की लागत से दो वर्ष पूर्व महाशय धर्मपाल छात्रावास का निर्माण किया है। महाशय जी अपने दैनिक जीवन में न जाने कितने प्रकल्पों, संस्थानों, न्यासों, आश्रमों आदि को तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करते रहते हैं। हाल ही में दिल्ली में 25 से 28 अक्टूबर 2012 में स्वर्ण जयन्ती पार्क रोहिणी, नई दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष के रूप में आपकी गरिमामयी उपस्थिति बालकों, नवयुवकों, प्रौढ़ों, तथा वृद्ध नर-नारियों सभी के लिए प्रेरणाप्रद थी। आप पूरे सम्मेलन में देश-विदेश से पधारे प्रतिनिधियों, विद्वानों, तथा राजनीतिज्ञों के मध्य आकर्षण का केन्द्र थे। आपकी स्फूर्ति तथा जोश नवयुवकों के लिए निरंतर आगे बढ़ते रहने का संदेश देता प्रतीत हो रहा था। दोनों हाथ उठाकर झूमते हुए वैदिक उद्घोषों के साथ नृत्य की मुद्रा में आना आपकी चिर- परिचित शैली रही है। महाशय जी 'महाशय चुन्नीलाल धर्मार्थ ट्रस्ट संदेश' नामक मासिक पत्रिका में 'सफलता के सूत्र' शीर्षक से एक स्थाई स्तम्भ लिखते हैं, जिसमें वे उन महत्वपूर्ण बिन्दुओं तथा अनमोल विचारों को प्रस्तुत करते हैं, जिन पर अमल करते हुए व्यक्ति विकास के पथ पर अग्रसर हो सकता है। इसी के साथ आपके सम्पादकीय के रूप में विचार भी बहुत ही सारगर्भित, नीतिपरक, तथा अनुकरणीय होते हैं। निश्चय ही महाशय जी एक जीवन्त व्यक्तित्व हैं। वे सामान्यत: एक मानव नहीं, वरन् महामानव हैं।

जन्मदिवस पर महाशय जी का सन्देश

सुन्दर विचार- करें सपनों को साकार

मनुष्य को जो कुछ भी हासिल होता है, विचारों की बदौलत ही हासिल होता है। अच्छा-बुरा चिन्तन ही हमारी सफलता-असफलता, यश-अपयश और सुख-दुख का मूल है। इसलिए सभी को अपने विचारों की पवित्रता को लेकर खास तौर से सजग रहना चाहिए। आज मेरे पास जो कुछ भी है, उसे मैं अपने सुन्दर और सकरात्मक विचारों का ही नतीजा मानता हूं।

मुझे संघर्ष के शुरुआती दौर से लेकर आज तक कभी भी व्यावसायिक क्षेत्र में निराशा का सामना न करना पड़ा। इसके पीछे मूल वजह यही ही कि मैंने अपने चिन्तन पर निराशा को हावी होने का मौका नहीं दिया। इसी प्रकार लोगों का जो अपार स्नेह-प्रेम मुझे अब तक मिलता रहा है और प्रभु जी की कृपा बनी रहो, तो आगे भी मिलता रहेगा। उसमें भैी 'सब जग ईश्वर रूप है' की भावना रखते हुए सबको प्यार से गले लगाने के अपने निराले अंदाज को ही मैं मूल मानता हूं। कहने का तात्पर्य यह है कि कामना कोई भी हो, उसे सुन्दर और सकारात्मक विचारों के बिना फलीभूत नहीं किया जा सकता। मौजूदा दौर में लोगों को जो यह अनमोल जीवन, बोझिल महसूस हो रहा है, मेरे ख्याल में इसकी और कोई वजह नहीं, सिर्फ विचारों की गंदगी ही इस दुर्दशा के लिए जिम्मेदार है। यदि हम इस गंदगी को दूर करने में कामयाब हो जाए, अंतःकरण को सुन्दर विचारों से भर लें, तो निश्चित रूप से हमें अपने जीवन और उपलब्धियों पर फख्र महसूस होगा।

इस दुनिया में जो भी महान हुआ है, उसमें ज्ञान, धन और बल से भी बढ़कर सुन्दर विचारों का, अच्छे चिन्तन का योगदान रहा है। युवा पीढ़ी को मेरी इस बात से सबक लेकर अपने व्यक्तित्व को संवारने की भरपूर चेष्टा करनी चाहिए, ताकि अपनी उपलब्धियों पर फख्र महसूस हो सके।

-शुभाकांक्षी- महाशय धर्मपाल

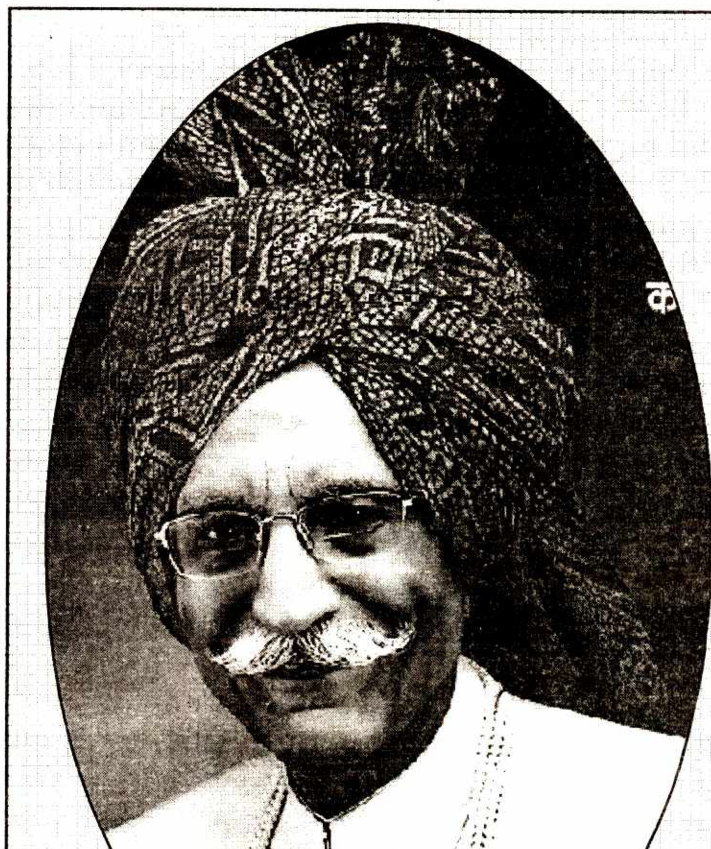

आर्यरत्न, उदारचेता, समाजसेवी

महाशय धर्मपाल जी

को ९०वें जन्मदिवस पर

हार्दिक शुभकामनाएं

त्याग तपस्या की प्रतिमा तुम सत्य ज्ञान के सागर।
मानवता भी धन्य हो गयी तुम सा मानव पाकर॥

तीर्थ नगरी गया में वेद सम्मेलन व राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन

सुमन कुमार वैदिक
गया (बिहार)

बिहार प्रान्त की प्रसिद्ध धार्मिक नगरी गया के विशाल आजाद मैदान के परिसर में आर्य प्रदेशिक प्रतिनिधि सभा के मार्ग दर्शन में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बिहार प्रक्षेत्र एवं मगध प्रमण्डलीय आर्य सभा के संयुक्त तत्वावधान में वेद सम्मेलन एवं राष्ट्र रक्षा महायज्ञ का आयोजन 13 से 16 दिसम्बर तक "आओ लौट चले वेदों की ओर के" संकल्प के साथ सम्पन्न हुआ। डी.ए.वी. संस्था और आर्य समाज का ऐसा सुन्दर समन्वेय बहुत कम दिखाई देता है जिसमें डी.ए.वी. कार्यकारणी के सभी अधिकारी एवं छात्र-छात्राऐं चारो दिन उपस्थित रहे। वेद व्याकरण की प्रकाण्ड पण्डिता गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ नजीबाबाद (उ.प्र.) की बिदुषी आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेदभारती ने ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने कहा कि वेद को वास्तविक प्रकाश माना है क्योंकि उसमें सदैव चेतना रहती है उसमें ज्ञान है, विज्ञान है अपनी अपनी योग्यता के अनुसार उसमें से नाना वस्तुएं निकालने का प्रयास करते हैं। उन्होंने वेद को ईश्वर ज्ञान सिद्ध किया, जिसमें मानव के निकास के लिए सभी को ज्ञान दिया गया है। उसके ज्ञान में वृद्धपन नहीं होता, न न्यूनता होती है जिस प्रकार परमात्मा कण-कण में व्याप्त है उसका ज्ञान भी कण-कण में व्याप्त रहता है। आधुनिक युग के नये मतमान्तरों में सबसे प्राचीन पारसी मत धर्म ग्रन्थ जैन्दास्ता कहलाता है। यह अथर्ववेद का अनुवाद दिखाई देता है अथर्ववेद का अन्य नाम छन्दोवेद भी है जो नाम अपभ्रंश होकर जैन्दाव्यस्ता कहलाने लगा। इससे स्पष्ट होता है कि वेद प्राचीनतम् ग्रन्थ हैं। इसकी विकृति के कारण जैन, बौद्ध इत्यादि मतों का जन्म हुआ और हिन्दू एक नहीं हो पा रहा है। आज अम्बेडकर के समर्थक मनु को प्रति घृणात्मक प्रचार करते हैं जब कि स्वयं अम्बेडकर ने कभी मनुस्मृति का जो विरोध नहीं किया। मनु का विरोध किया जाता है यह ठीक नहीं है। कार्यक्रम का प्रारम्भ ध्वजारोहण से हुआ। शोभा यात्रा निकाली गयी, जिसमें झांकियों के माध्यम से राष्ट्र की परिस्थिति से अवगत कराया।

सम्मेलन में वेदपाठ करतीं आचार्या डॉ. प्रियंवदा वेदभारती व गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां -केसरी।

गंगापुर सिटी में सामवेद पारायण महायज्ञ एवं सत्संग सम्पन्न

सुमन कुमार वैदिक
गंगापुर सिटी (राजस्थान)

आर्य समाज गंगापुर सिटी के तत्वावधान में जनकल्याण व सत्य धर्म का मर्म समझाने तथा समाज को कर्त्तव्यों का बोध कराने हेतु सामवेद पारायण महायज्ञ एवं सत्संग के समारोह का आयोजन भव्यता पूर्ण किया गया। आयोजन से पूर्व जनजागरण हेतु 251 कलश धारी राजस्थानी वीरांगनाओं युक्त विशाल शोभा यात्रा नगर में निकाली गयी। सामवेद पारायण या की ब्रह्मा डॉ. प्रियंवदा वेद भारती आचार्या थी। कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणीयों सुन्दर वेद पाठ तथा मधुर भजनों की प्रस्तुति की गयी। ब्रह्मचारिणीयों द्वारा सुन्दर वेद पाठ तथा मधुर भजनों की प्रस्तुति की गयी। ब्रह्मचारिणी आरुषी के ओजस्वी पूर्ण उद्‌बोधन नयी पीढ़ी को वेद मार्ग पर चलने को प्रेरित किया। कल्पना शास्त्री, घोशा वरेणया, श्रेया सूर्या द्वारा भजनों की प्रस्तुति में श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। वेद विदुषी डॉ. वेद भारती ने अपने उद्‌बोधन बताया कि ऋषि दयानन्द ने संध्या में सबसे पहले शन्नो देवी मन्त्र संध्या की व्याख्या करते हुए कहा कि हे इन्द्र। इस संसार को नियम से बनाने वाले हमारे जीवन को भी नियमित बना आपने प्रातः काल में सूर्य को उत्पन्न किया इसी प्रकार हमें उस महान ज्योति संन्धा की व्याहतियों को जानने से वह हमारा कल्याण कर देवता बना देती है। यज्ञ पद्धति पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मीमांसा दर्शन कहता है कि वेद के जो मंत्र क्रिया में लगते हैं वहीं पठनीय हैं, शेष का कोई महत्व नहीं, परन्तु महर्षि दयानन्द ने यज्ञ के साथ परमेश्वर को जोड़ा और कहा कि पर्यावरण की शुद्धि के साथ मन तभी पवित्र होगा, जब परमेश्वर का ध्यान वेद मन्त्र के माध्यम से करेंगे। महर्षि याज्ञवलक्य ने दो प्रकार के याज्ञिकों की चर्चा की एक जो देवताओं की शुद्धि के लिए देव यज्ञ करने वाले दूसरे यजमान की आत्मा सुसंस्कृत हो इसके लिए आत्म ज्ञानी। अन्त में याज्ञवल्क्य ने भी कहा कि आत्म याज्ञी देवयाज्ञी से श्रेष्ठ है। गायत्री मंत्र के महत्व की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य की बुद्धि कभी भी कुमार्ग पर जा सकती है इसलिए बालक हो या वृद्ध सभी के लिए यज्ञ सिमटते-सिमटते दीपक जलाने तक सीमित रह गये। दीपक में वह भेदक शक्ति नहीं जो अग्नि में है जिसमें वायुमण्डल शुद्ध हो और उसके विषाक्त परमाणु नष्ट हो सकें। वैदिक काल से ही राक्षस और देवता दोनों यज्ञ करते आये हैं। देवता जहाँ विधि विधान से सर्वकल्याण की भावना से युक्त सुन्दर सामग्री से यज्ञ करते है वहीं राक्षसों का यज्ञ नष्ट करने की भावना से होता है। शतपथ ब्राह्मण में आया है कि केवल वेद मन्त्रों से यज्ञ किये जाने चाहिए। वेद मन्त्रों के स्थान पर रामचरित्र मानस, भागवत, गीता आदि के श्लोकों से दी आहूति वाले या अशुद्ध होते है। यज्ञ के वायुप्रदूषण दूर करने से अतरिक्त बहुत प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ होते है। रोगनाशक पुष्टिवादक मिष्ठ हर ऋतु की अलग-अलग सामग्री से घर-घर यज्ञ होते थे जिससे याज्ञिक रूग्णों से बचते थे वही आत्मा की शुद्धि के साथ वेद मन्त्रों की रक्षा भी होती थी। उन्होंने उदाहरण देकर बताया कि बाल्मीकी रामायण में अनेक स्थलों पर भगवान् राम के सन्ध्योपसना और अग्निहोत्र करने का वर्णन आता है।

वेद विदुषी ने कहा कि नारी को कोमल ही नहीं रहना चाहिए बल्कि सन्तुलन बनाकर चलना चाहिए। उसे कठोर वाणी नहीं शीतल वाणी बोलनी चाहिए। जहां पति-पत्नी में प्रेम होता है वहाँ बच्चे आज्ञाकारी होते हैं। पितृ यज्ञ की चर्चा में कहा जब परिवार में बड़े लोगों की पूजा होगी तब उनका आशीर्वाद मिलेगा अतिथि या और बलिवैश्य देव यज्ञ पर भी चर्चा की। समापन से पूर्व पं. मदन मोहन आर्य ने सबको धन्यवाद दिया तथा अपने प्रवचनों में गुरु कुलीय शिक्षा के महत्व को बताया तथा जन मानस से कहा कि यदि बच्चों को गुरुकुल में नहीं पढ़ा सकते तो भी उनकी सहायता करो।

जीवनी शक्ति पाने आये ४७ अस्थमा रोगियों को पिलाई गई औषधियुक्त खीर

प्रदीप आर्य
जयपुर (राजस्थान)

जीवनी शक्ति प्राप्त करने में न कड़कड़ाती ठण्ड वाधा बनती है न समय न स्थान। ऐसा नजारा दिखा विगत रात्रि हिण्डौन हाउस में जहाँ विगत रात्रि 12 बजे तक चन्द्रमा की चाँदनी में शीतल औषधि युक्त खीर पाने 47 अस्थमा रोगी डटे रहे। शिविर संयोजक दीपांकर ने बताया कि समाज सेवी संस्थान संरक्षक यशपाल 'यश' ने रोगिओं को अब तक मिले लाभ का जायजा लेकर उन्हें डायट मैनेजमैण्ट एवं जीवन शैली की उत्तमता हेतु आवश्यक निर्देश दिये। प्रारम्भ में डॉ. प्रमोद पाल व डॉ. कैलाश केन्द्र पर किया। अगली पूर्णिमा 27 जनवरी रविवार को शिविर लगा। तीन शिविरों तीन शिविरों में इस चिकित्सा से अस्थमा रोगियों को स्थाई लाभ मिलता है। अधिक जानकारी एवं पंजीकरण 9414360248 पर हो सकती है।

८०४ दम्पतियों को एक साथ यज्ञ प्रशिक्षण

प्रतिनिधि
लुधियाना (पंजाब)

पंजाब प्रांत के औद्योगिक नगर लुधियाना में 22 से 23 दिसम्बर को एक अभूतपूर्व यज्ञ प्रशिक्षण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 804 दम्पतियों ने एक साथ यज्ञ प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण आचार्य ज्ञानेश्वर दर्शनाचार्य, अधिष्ठाता, वानप्रस्थ साधक आश्रम के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। भयंकर कड़ाके की सर्दी में भी लोगों ने धैर्य पूर्वक यज्ञ की उपयोगिता, लाभ महत्त्व, परिणाम, प्रभाव आदि से सम्बन्धित सूक्ष्म विषयों को सुना और सैकड़ों व्यक्तियों ने दैनिक, साप्ताहिक यज्ञ करने का संकल्प लिया। इस यज्ञ के कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल कुरूक्षेत्र के आचार्य डॉ. देवव्रत ने किया और अतिथि विशेष रूप में डॉ. राजेन्द्र वेदालंकार के प्रवचन भी हुए।

इस कार्यक्रम का आयोजन राकेश जैन तथा उनके परिवार के लोगों ने अत्यन्त श्रद्धा पूर्वक किया। लुधियाना की पुरोहित सभा के पंडितों ने बहुत तपस्या और पुरुषार्थ पूर्वक अपना योगदान प्रदान किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यक्रम

- होलिकोत्सव : २४ मार्च २०१३
- आर्यरत्न महाशय धर्मपाल जी के जन्मदिवस पर भव्य अमृत महोत्सव : २६ मार्च २०१३

वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली। स्वामी दयानन्द संस्थान का वार्षिकोत्सव १४ से १७ मार्च तक महात्मा वेदभिक्षु सेवाश्रम, केशवनगर में होगा।

लाक्षागृह, बरनावा- यहाँ प्रतिवर्ष होता है चतुर्वेद पारायण महायाग

डॉ. बीना रुस्तगी

महाभारत कालीन ऐतिहासिक टीले में आज भी विद्यमान हैं गुफाएं

पूज्यपाद ब्रह्मचारी जी द्वारा लाक्षागृह स्थल, बरनावा में महर्षि महानन्द महाविद्यालय तथा विशाल आश्रम की स्थापना की गयी है जहां प्रतिवर्ष, शिवरात्रि के बाद रविवार से रविवार तक लगातार आठ दिनों तक पांच विशाल यज्ञवेदियों पर विराट चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का भव्य आयोजन होता है। इस अवसर पर हजारों की संख्या में क्षेत्र सहित देशभर से श्रद्धालु नर-नारी व बच्चे पधारते हैं और यज्ञ में आहुति प्रदान कर अपने आप को धन्य अनुभव करते हैं। दो नदियों के संगम पर स्थापित यह ऐतिहासिक स्थली दर्शनीय है। यहां रक्षावन्धन के दिन भी सामवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न होता है। यहां आकर सभी श्रद्धालु यज्ञ एवं प्रवचनों के दिव्यामृत का पान कर लाभान्वित होते हैं। बरनावा (वारणावत) मेरठ-जनपद में हिण्डन और काली नदी के संगम पर स्थित है। यहीं महाभारत काल का ऐतिहासिक 'लाक्षागृह' (लाखामण्डप) का टीला है, यहाँ कौरवों ने पाण्डवों को अग्नि में जलाने का षड्यन्त्र रचा था और सौभाग्य से पांडव वहाँ से बच निकले थे। यह टीला बड़े विशाल रूप में आज भी विद्यमान है। इतना ही नहीं, इस ऐतिहासिक टीले पर चार बड़ी गुफाएं भी मौजूद हैं, जिन्हें पुरातत्व विभाग ने अपने नियंत्रण में लिया है। कहा जाता है कि ये वही गुफाएं हैं, जहां से पाण्डव बाहर निकले थे। इस टीले का कायाकल्प उस समय हुआ, जब पूर्व जन्म के श्रृंगी ऋषि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त ने यहां विशाल महर्षि महानन्द महाविद्यालय व यज्ञशालाओं का निर्माण कराया। ज्ञातव्य है कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त का जन्म उत्तर प्रदेश के गाज़ियाबाद जनपद में मुरादनगर के निकट स्थित खुर्रमपुर-सलीमाबाद गाँव में, एक निर्धन, अशिक्षित, कबीर-पन्थी जुलाहे के घर में हुआ। उल्टी प्रक्रिया में, अर्थात् उल्टे पैरों पैदा होने पर नाम रखा गया- कृष्णदत्त। इनका जन्म, सन् १९४२ के उत्तर चातुर्मास्यकाल में हुआ। कहते हैं, जब पूज्य ब्र. जी लगभग दो मास की अवस्था के ही थे, एक दिवस उनकी माता ने उन्हें शवासन में लेटा दिया। कुछ समय उपरान्त शिशु की गर्दन दोनों ओर हिलने लगी और होठ फड़फड़ाने लगे। इस अवस्था में शिशु को पाकर परिवार के सदस्य चकित हुए। धीरे-धीरे आसपास के अन्य गाँवों में विचित्र बालक का तथाकथित परिचय बढ़ने लगा। लगभग १५ वर्ष की अवस्था में, शीत काल की मध्य रात्रि में, लगभग एक बजे, अपने परिवार और गाँव को छोड़कर भाग खड़े हुए।

महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय : ब्रह्मचारी जी की प्रेरणा से लाक्षागृह में आरम्भ में निःशुल्क वैदिक शिक्षा के लिए एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना हुई। ब्र. जी के योगसिद्धात्मा शिष्य के ही नाम पर विद्यालय का नामकरण हुआ- 'श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय'। सम्प्रति, इस संस्कृत महाविद्यालय में लगभग १५० छात्र, वैदिक शिक्षण-पद्धति के आधार पर, आचार्य स्तर तक विभिन्न विषयों में प्रबुद्ध अध्यापकों द्वारा शिक्षार्जन कर रहे हैं और यहाँ के शिक्षक पूज्य ब्रह्मचारी जी द्वारा वेद एवं यज्ञ-प्रचार की ज्योति को प्रभावी रूप से दैदीप्त कर रहे हैं। महाभारतकालीन यह ऐतिहासिक एवं पवित्र स्थली दर्शनीय है। यहां आकर दिव्य अनुभूति होती है। ऐसा लगता है कि जैसे किसी महान विरासत का हम अवलोकन कर रहे हैं। यदि अवसर मिले तो एक बार यहां अवश्य आएं।

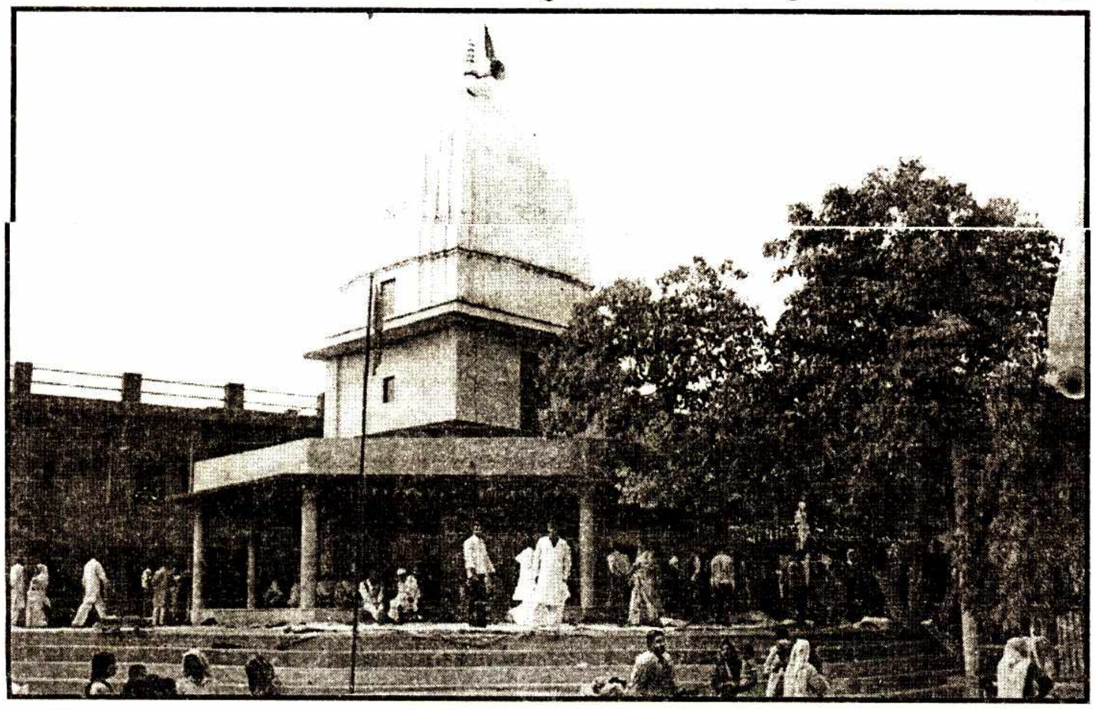

महर्षि महानन्द गुरुकुल महाविद्यालय (लाक्षाग्रह) बरनावा स्थित विशाल मुख्य यज्ञशाला -केसरी

पूज्य ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी की अमृतवाणी पुस्तक रूप में

1. आत्मलोक	25/-	25. यागमयी साधना	25/-
2. आत्मा व योग साधना	25/-	26. यागमयी सृष्टि	25/-
3. अलङ्कार व्याख्या	30/-	27. दिव्य श्री रामकथा	100/-
4. यज्ञ प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40/-	28. महाभारत एक दिव्य दृष्टि	80/-
5. धर्म का मर्म	40/-	29. याग चयन	25/-
6. देवपूजा	20/-	30. ज्ञान-कर्म-उपासना	25/-
7. रामायण के रहस्य	25/-	31. अतीत का दिग्दर्शन (भाग-1,2,3) प्रत्येक भाग	100/-
8. महाभारत के रहस्य	20/-	32. दिव्य ज्ञान	30/-
9. महाराजा रघु का याग	20/-	33. महर्षि विश्वामित्र का धनुर्याग	25/-
10. मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	20/-	34. आत्म उत्थान	30/-
11. वनस्पति से दीर्घ आयु	20/-	35. तप का महत्व	30/-
12. चित्त की वृत्तियों का निरोध	25/-	36. अध्यात्मवाद	25/-
13. आत्मा , प्राण और योग	20/-	37. ब्रह्म विज्ञान	35/-
14. पंच महायज्ञ	20/-	38. वैदिक प्रभा	30/-
15. अश्वमेघ याग और चन्द्रसूक्त	30/-	39. प्रकाश की ओर	35/-
16. योग मन्जूषा	25/-	40. कर्तव्य में राष्ट्र	35/-
17. आत्मदर्शन	25/-	41. वैदिक विज्ञान	35/-
18 पुत्रेष्टि-याग और मातृ दर्शन	25/-	42. धर्म से जीवन	30/-
19. यौगिक प्रवचन माला (भाग-1,2,3,4,5)प्रत्येक	50/-	43. Yogic Wisdom of Ancient Rishis	50/-
20. यौगिक प्रवचन माला (भाग- 6,7) प्रत्येक	60/-	44. पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवं कर्मभूमि लाक्षागृह	10/-
21. वेद पारायण यज्ञ का विधि विधान	25/-	45. साधना	30/-
22. रावण इतिहास	35/-	46. यज्ञोमयी-विष्णु	40/-
23. याग और तपस्या	45/-	47. त्रेताकालीन विज्ञान	40/-
24. यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	35/-	48. स्वर्ग का मार्ग	40/-
		49. शंका-निवारण	25/-
		50. माता मदालसा	40/-

यहाँ उपलब्ध है ब्र. कृष्णदत्त जी का साहित्य

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य- पुस्तकों, कैसेट्स, सीडी/डीवीडी के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है :-

१. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, (बागपत) उ.प्र. दूर. : ०१२३४-२४०३९५
२. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं० १६५/३०ए, दक्षिण भोपा रोड, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ०प्र०), ०१३१-२६०६४१४
३. कु० नीरू अबरोल, के-३ लाजपत नगर-३, नई दिल्ली, ४१७२१२१४, ०९८१०८८७२०७
४. श्री सुशील त्यागी, डी०-२९३ रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ०प्र०), ०१२०-२६४२०५२
५. श्री लोमश त्यागी, १०६/४ पंचशील कालोनी, गढ़ रोड, मेरठ (उ०प्र०), ०१२१-२७६२८१८
६. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-३८० सेक्टर बीटा-२, ग्रेटर नोएडा (उ०प्र०), दूरभाष : ९४५६२७४३५०
७. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम- बहेड़ी, रोहाना मिल, जिला- मुजफ्फरनगर (उ०प्र०)
८. श्री विवेक त्यागी, १६ अशोक कालोनी, अलकापुरी, हापुड़ (उ०प्र०), दूर. : ०१२२-२३१६१९६
९. श्री संजीव त्यागी, ११०७, सैक्टर-३, बल्लभगढ़, जिला- फरीदाबाद (हरियाणा)
१०. श्रीमती बाला, २५१, दिल्ली गेट, नई दिल्ली, दूरभाष : २३२८२०८८
११. श्री पूनम त्यागी, १६-ए, सेक्टर-१०, नोएडा (गौतमबुद्धनगर)
१२. मै० गोविन्दराम हासानन्द, ४४०८, नई सड़क, दिल्ली, दूरभाष : २३९७७२१६
१३. मै० हर्ष मेडिकोज, ए-२/३१, सै.-११० मार्केट, फेस-२, नोएडा, उ.प्र. दूर. : ०१२०-६४१७१५९
१४. जवाहर बुक डिपो, बुढ़ाना गेट, आर्यसमाज, मेरठ (उ०प्र०)
१५. डॉ० अशोक आर्य, आर्यावर्त कालोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ.प्र.), चल. : ०९४१२१३९३३३

अमृतवाणी कैसेट, सी.डी. व डी.वी.डी. में

1. मधु शान्ति पाठ	20. काला हिरन यज्ञ को ले गया
2. मंत्र-पाठ	21. यज्ञ में गऊ के बछड़े की बलि का अर्थ
3. अमृत क्या है?	22. यजमान का रथ द्योलोक में
4. अक्षय क्षीर-सागर में विष्णु भगवान्	23. माता मदालसा
5. इन्द्र देवता	24. राजा नल का दीपावली गान
6. ब्रह्म विद्या	25. कपिल मुनि एवं राजा सगर
7. ब्रह्मवेत्ता	26. लंका का विज्ञान
8. ब्रह्मसूत्र की व्याख्या	37. महर्षि विश्वामित्र को ब्रह्मवेत्ता की उपाधि
9. संसार एक यज्ञशाला	28. भगवान राम का तप
10. आत्मा का भोजन याग	29. भगवान कृष्ण का जीवन, बटलोई वार्ता व जयद्रथ वध
11. अश्वमेध याग	30. महारानी द्रोपदी का जीवन, चीर हरन
12. वाजपेयी याग	31. महाराजा युधिष्ठिर का राजसूय याग
13. पंच-याग	32. निर्मोही नगरी
14. त्रिकोण याग	33. चित्त की वृत्तियों का निरोध
15. सविता याग	34. यम नचिकेता संवाद
16. स्वाहा की व्याख्या	35. मृत्यु क्या है?
17. चौबीस होता से एक होता तक	
18. सुविधा न होने पर याग	
19. याग की महत्ता	

आर्यसमाज मन्दिर, तलवण्डी में मंच का सुन्दर दृश्य- केसरी।

आर्य समाज, तलवण्डी, कोटा

त्रिदिवसीय महोत्सव सम्पन्न

रघुराज सिंह कर्णावत
कोटा।

आर्य समाज तलवण्डी का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव 22 से 24 दिसम्बर तक मनाया गया। मंत्री भैरूलाल आर्य ने बताया कि इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: तथा सायं दोनों समय पं. क्षेत्रपाल आर्य के पुरोहितत्व में देवयज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के उपरान्त सत्संग में वैदिक विद्वान् प्रो. रामनारायण शास्त्री, पं. मदनमोहन आर्य, वैदिक प्रवक्ता अग्निमित्र शास्त्री तथा पं. वृद्धिचन्द शास्त्री ने अपने प्रवचनों से आर्य महिला-पुरूषों को लाभान्वित किया साथ ही आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक सतीश सुमन ने अपने सुमधुर भजनों से उपस्थित समूह को आनन्दित किया।

इस अवसर पर 23 दिसम्बर को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस मनाया गया। गंगापुर सिटी से पधारे मदन मोहन आर्य ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार आज शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिस्तम्भ का कार्य कर रहा है। वैदिक प्रवक्ता अग्निमित्र शास्त्री ने कहा कि स्वामी जी के द्वारा चलाया गया शुद्धि आन्दोलन आर्य जाति के इतिहास में अद्वितीय है। उनके जीवन में सत्य को ग्रहण करने के लिए श्रद्धा का भाव था। जोधपुर से पधारे वैदिक विद्वान् प्रा. रामनारायण शास्त्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द त्याग एवं तपस्या की मूर्ति थे। उनके द्वारा किये गये कार्य हमेशा प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे। हाड़ौती के वैदिक विद्वान पं. वृद्धिचन्द शास्त्री ने कहा कि माता-पिता को बच्चों में अच्छे संस्कार प्रदान करने चाहिए। स्वामी श्रद्धानन्द से प्रेरणा लेकर ऋषि के मिशन को बढ़ाना चाहिए। जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि, जैसे स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य समाज के कार्य लोगों के बीच में जाकर किये वैसे ही हमें भी समाज के कार्यों को आर्यसमाज के मंदिर से बाहर ले जाकर लोगों के बीच में करने चाहिए। इस अवसर पर आर्यसमाज तलवण्डी की ओर से आर्य वीर दल के संगठन को मजबूत करने के लिए आर्य वीर दल राजस्थान के संरक्षक मदनमोहन आर्य को एक लाख रूपये की अनुदान राशि प्रदान की गई। वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत लालचन्द आर्य के आर्थिक सहयोग से महर्षि दयानन्द का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मात्र दस रूपये के मूल्य पर उपलब्ध कराया गया। उपस्थित लोगों ने सैंकड़ों की संख्या में सत्यार्थ प्रकाश खरीदे।

इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, जिला मंत्री कैलाश बाहेती, आर्य समाज प्रधान तलवण्डी रघुराज सिंह कर्णावत, रामप्रसाद याज्ञिक, चन्द्र गुप्ता, डॉ. के.एल. दिवाकर, पं. रामदेव शर्मा, भेरूलाल शर्मा, शिवदयाल गुप्ता, ओम प्रकाश आर्य, मंत्री रावतभाटा, योगेश्वर स्वरूप भटनागर, हेमेन्द्र विजयवर्गीय, बारां, सहित कोटा, बारां तथा दबड़ा के सैंकड़ों की संख्या में आर्य महिला पुरूष उपस्थित थे।

आर्य समाज ने बंदी महिलाओं को बांटी गर्म शॉलें

अर्जुन देव चड्ढा
कोटा।

आर्य समाज कोटा की ओर से शुक्रवार को केन्द्रिय कारागार में बंदी मलिाओं को शॉलें और गर्म कपड़े वितरित किए गए। जिन्हें पाकर महिलाएं और बच्चे हर्षित हो उठे। आर्य समाज की ओर से गर्म शॉल, गर्म मौजे, बिस्किट तथा टॉफी बांटी गई, वहीं कुछ साड़ियां, सलवार सूट, बच्चों के ऊनी कपड़े, मौजे, टोपे और पजामे भी बांटे गए। इस अवसर पर कैलाश बाहेती, जीडी पटेल, राकेश पुरी, महेन्द्र चौहान, जगदीश बाठला, संजय चंदा, दर्शन पिपलानी मौजूद थे। इस दौरान आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि आर्य समाज का छठा नियम संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। जिसके पालन में प्राणी मात्र के कल्याण की भावना के साथ आर्य समाज सेवा के कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि इसी भावना को लेकर आर्य समाज की ओर से विभिन्न सामजिक गतिविधयां जनसहयोग से कोटा में चलाई जा रही हैं। ऐसे ही केन्द्रीय कारागार में बंदियों के बीच भी गत तीन वर्षों से समय-समय पर उनकी आवश्यकता की वस्तुएं वितरित की जाती रही हैं। उन्होंने कहा कि कड़ाके की ठण्ड के बीच महिलाओं और उनके नन्हें बच्चों के लिए गर्म कपड़े अवश्यक थे। चड्ढा ने जेल अधीक्षक शंकर सिंह की प्रशंसा करते हुए कहा कि जब से वे कोटा कारागार में आए हैं, तब ही से विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के द्वारा कैदियों के सुधार के कार्यक्रम करते आ रहे हैं।

केन्द्रीय कारागार में बंदी महिलाओं को शॉल व गर्म कपड़े वितरित करने का दृश्य- केसरी।

इस अवसर पर महर्षि दयानंद सरस्वती कृत अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की पांच प्रतियां जेल अधीक्षक को जेल की लाइब्रेरी के लिए, आर्य समाज जिला सभा की ओर से भेंट की गई। वहीं जेल अधीक्षक शंकर सिंह ने कहा कि कोई भी कैदी कारागार में मर्जी से नहीं आता है, लेकिन जाने अनजाने में हुई भूल का खामियाजा भुगतना पड़ता है ऐसे में आर्य समाज जैसे संगठन इन कैदियों में चेतना और समरसता का वातावरण तैयार करते हैं और कैदियों को समाज और देश से जोड़े रखते हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को जब भी कहा जाता है, सदैव सेवा के लिए तत्पर नज़र आता है।

निर्धन परिवारों के बच्चों में पाठ्य सामग्री वितरित किये जाने का दृश्य- केसरी।

आर्य समाज द्वारा निर्धन छात्रों में पाठ्य सामग्री वितरित

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

कच्ची बस्ती में रहने वाले मजदूर, किसान निर्धन परिवारों के बच्चों में पाठ्य सामग्री वितरित करके आर्य समाज ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रति लोगों में जागृति पैदा करने के लिये प्रयास कर रहा है। उक्त विचार गुरू विरजानन्द पब्लिक स्कूल नई रोझड़ी ग्राम के छात्र-छात्राओं को कापियां, पेन, बिस्कुट के पैकेट आदि वितरित करते हुए आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने व्यक्त किये। जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा, मंत्री कैलाश बाहेती, कोषाध्यक्ष जे.एस. दुबे, उपप्रधान रामप्रसाद याज्ञिक, विद्वान डॉ. के.एल. दिवाकर उक्त स्कूल में पहुंचे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में तिलक लगाकर अतिथियों का स्वागत किया गया तत्पश्चात विद्यालय के प्रधानाध्यापक क्षैत्रपाल सिंह कुशवाह, निदेशक विनोद सिंह कुशवाह, व्यवस्थापक विष्णु शास्त्री ने विद्यालय में चल रही गतिविधियों व सेवा कार्यों की जानकारी दी। विद्यालय के बच्चों ने स्वागत गीत गाकर अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए ईश्वर, स्तुति के भजन भी सुनायें। कार्यक्रम में कैलाश बाहेती, डॉ. के. एल. दिवाकर, जे.एस. दुबे, रामप्रसाद याज्ञिक ने भी संबोधित करते हुए बच्चों को मन लगाकर पढ़ने की बात कही। प्रधानाध्यापक क्षेत्रपाल सिंह ने सभी का धन्यवाद किया तथा शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

नहीं रहीं माया आर्या

सतीश आर्य
धामपुर (बिजनौर)

19 दिसंबर 2012 को सतेन्द्र कुमार शर्मा आर्य की पत्नी माया शर्मा का लम्बें समय से स्वास्थ्य खराब होने के कारण स्वर्गवास हो गया। श्रीमति आर्या ने अपना बेटा नितीश शर्मा व बेटी नेहा व चंचल को छोड़ा है। अन्तोष्टी संस्कार ओमप्रकाश मोल में वैदिक रीति रिवाज से संपन्न हुई। इस अवसर पर मुरादबाद से पधारे पं. लाल किशोर शास्त्री ने शांति यज्ञ किया। इसके बाद एक शोक सभा का आयोजन किया गया और उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गयी। शोक सभा में अशोक आर्य, ओमप्रकाश गोला, कस्तूरीलाल आहूजा, आचार्य रामचन्द्र आर्य, सोमपाल शास्त्री, मास्टर होरी सिंह आदि शामिल रहे।

यज्ञों द्वारा हुआ स्वर्ण जयन्ती समारोह का समापन

सुमन कुमार वैदिक
सलीमाबाद (मुरादनगर)।

ब्रह्मचारी कृष्णदत्त (बरनावा) के नई दिल्ली में प्रथम प्रवचन एवं प्रकाशन के पचास वर्ष पूर्ण होने पर मनाये जा रहे, स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रमों का समापन 6 जनवरी को उनकी जन्म स्थली पर हुए यज्ञों से हुआ। इस अवसर पर जन्म स्थली पर यज्ञशाला का लोकार्पण तथा पुस्तकालय का शिलान्यास के साथ ब्रह्मचारी के साहित्य पर कार्य करने वालों को सम्मानित किया गया। डॉ. योगेश शास्त्री गुरूकुल कांगड़ी, डॉ. कृष्णावतार, जगदीश मौर्य, राममूर्ति शर्मा, माया प्रकाश त्यागी, चन्द्रहास को वैदिक अनुसंधान समिति के चौधरी जितेन्द्र द्वारा सम्मानित किया गया। 4 से 6 जनवरी तक चले सामवेद ब्रह्मा डॉ. योगेश शास्त्री, यजमान जयपाल सिंह (सलीमबाद) यजुर्वेद ब्रह्मा गुरूवचन शास्त्री, यजमान रामेश्वर त्यागी (डुण्डाहेड़ा गाजियाबाद), सोमपाल त्रिकोण यज्ञशाला पर ऋग्वेद के 9वें मण्डल से ब्रह्मा विक्रम वैद्य, यजमान प्रवीण त्यागी रहे। इस अवसर पर वैद्य विक्रम देव शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि यज्ञ से कुछ पाना चाहते हो तो महर्षियों के बनाये नियमानुसार यज्ञ करो, विधिहीन यज्ञ, न करने जैसा है। यज्ञमान को क्रोध, द्वेष, मनसापाप त्यागना होगा अन्यथा यह उसका ही नाश कर देंगे। मन की वृत्तियों को रोकने वाला ही यज्ञ करने का अधिकारी होता है। अक्षर बोधी होना और ज्ञानी होना दोनों में अन्तर है। जब इन्द्रियाँ यज्ञ से पवित्र होंगी तभी नेत्रों से, सतोगुणी तरंगे निकलेगी। बरनावा गुरुकुल से पधारे आचार्य विजयपाल ने कहा कि हम दो आंखों वालों को धोखा दे सकते हैं, किन्तु जिसकी असंख्य आंख हैं उस परमात्मा को नहीं। हमारे जीवन में व्यापकता हो, जैसा अपने विषय में सोचते हैं, दूसरों के विषय में भी सोचें। वेद परायण यज्ञों के मर्मज्ञ गुरुवचन शास्त्री ने अपने आध्यात्मिक चिन्तन रखते हुए कहा कि आज जो सामाजिक, पारिवारिक स्तर पर भटकाव है उसका कारण हमें अपने मूल को जानने की भूल से है। यज्ञ का अर्थ बहुत व्यापक होता है। सृष्टि, मनुष्य परमात्मा सभी यज्ञ स्वरूप हैं। ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त के प्रवचनों में यज्ञ का अर्थ जहाँ देव पूजा, संगतिकरण और दान बताया गया है वहीं उन्होंने संसार के सभी अच्छे कर्मों को यज्ञ कहा। हम जीवन पर्यन्त यज्ञ करें, उससे कभी विमुख न हों। उन्होंने अग्निहोत्र से अश्वमेघ याग पर्यन्त इसका विस्तार बताया है। सुमन कुमार वैदिक ने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों में आता है कि यह संसार एक संग्राम है। जिसमें इस आत्मा के निकट जब प्रकृति के गुण अधिक आ जाते हैं तो उस काल में मानव में विकृतियाँ आ जाती हैं, अग्नि प्रचण्ड हो जाती है और जब परमात्मा के गुण आ जाते हैं तो वहां शान्ति का प्रदर्शन हो जाता है। डॉ. योगेश शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी ने कहा कि ब्रह्मचारी कृष्ण दत्त ने अपने प्रवचनों में दो कोण से लेकर चौबिस कोण की यज्ञशालाओं का वर्णन किया। इसके साथ परमात्मा के अथाह ज्ञान को मानवता के लिए आचरण और व्यवहार में लाने का सरलतम और श्रेष्ठ मार्ग प्रदर्शित किया जिससे मानव अपना व जन साधारण का कल्याण करते हुए भवसागर से पार हो सकता है। उन्होंने ऐतिहासिक बहुत से प्रसंगों का स्पष्टिकरण किया। आज गुरुदेव को शरीर त्यागे 19 वर्ष हो चुके हैं, उनके प्रति हमें अपनी श्रद्धा को बनाये रखने के साथ उनके साहित्य पर खोज करनी होगी। अन्त यज्ञ और भोजन की व्यवस्था करने वाले यज्ञमानों का धन्यवाद दिया गया।

एनपीइजेड परिसर में धूमधाम से हुआ यजुर्वेद पारायण यज्ञ

सुमन कुमार वैदिक
नौएडा।

एनपीइजैड आवासीय परिसर में 25 से 27 जनवरी तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ आचार्य अरविन्द शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के प्रसिद्ध युवा भजनोपदेशक भीष्म ने भजनों की प्रस्तुति की तथा कहा कि आर्यसमाज राम और कृष्ण की सच्ची पूजा करता है उनके चरित्र का हनन नहीं करता। उद्गाता राजीव ने कहा कि चारों वेद समस्त ज्ञान विज्ञान के भण्डार हैं। यज्ञ के पश्चात् अपने मुख्य उद्बोधन में आचार्य अरविन्द शास्त्री ने कहा कि राष्ट्रीय यज्ञ में दी जाने वाली आहुति ऐसी होती है जिससे हमारे रक्त में उबाल आ जाये। जिस प्रकार हम अपनी माता की ओर उंगली उठानी सहन नहीं कर पाते इसी प्रकार मातृभूमि, जो कि उससे भी बढ़कर है, उसका अपमान न सहे। 26 जनवरी को आज हम अपने शहीदों को नमन करते हैं। यज्ञ से होने वाले लाभ का विशेष वर्णन करते हुए परायण यज्ञों के विद्वान आचार्य जी ने कहा कि यज्ञ में चावल, घृत, मिष्ट और पुष्टि कारक आहुतियों से उत्पन्न इथलीन गैस पर्यावरण को शुद्ध करती है। यज्ञ में अनेक प्रकार की समिधाओं और साकल्प का वर्णन आता है। समिधा वह होनी चाहिए जिससे कम कार्बन डाई ऑक्साईड गैस निकलती है जिनमें दूध होता है जैसे पीपल, बड़, आम की समिधा ली जाती है। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों के आधार पर कल्पवृक्ष की कथा सुनाते हुए विद्वान आचार्य ने कहा कि संसार में यज्ञ एक कल्पवृक्ष जैसा है यह वह स्थान है जहां मानव को वही वस्तु प्राप्त हो जाती है जिसकी वह कल्पना करता है। योगी की कल्पना करोगे तो योगी बनते चले जाओगे, गृहस्थी की कल्पना करोगे तो गृहस्थी बन जाओगे। मुक्ति की कल्पना करोगे तो मोक्ष मिल जायेगा। यदि जो भी कल्पना आस्था के साथ करोगे वह पूर्ण होगी। यज्ञमान को आशीर्वाद देते हुए कहा कि आहार और व्यवहार में पवित्रता होनी चाहिए। इनका द्रव्य शुभकार्यों में लगता रहे यज्ञ करते कराते रहें। आज हम यज्ञ इत्यादि आत्मिक कर्म नहीं करते किन्तु आत्मा के पिपासी रहते हैं प्रभु की महानता करूणा चाहते हैं करूणा तो मानव में ही रहनी चाहिए। यज्ञ से चरित्र निर्माण होता है। मनोरंजन के सार्थक साधनों का प्रचार हों। वेद के गान हो, धर्म और कर्म हों, सत्य वाक्य कठोर प्रतीत होते हैं, किन्तु सत्य के उच्चारण करने से मानव दूर न हो। अन्त में यज्ञमान ने सबको धन्यवाद दिया तथा जानकारी दी कि ब्रह्मचारी कृष्णदत्त और उनका गांव एक ही था। ब्रह्मचारी कृष्णदत्त ने उन्हें गोद में खिलाया तथा आज उनके ग्राम में बनने वाले स्मारक में इनके परिवार और मित्रों की ओर से एक लाख रूपये की राशी का सहयोग दिया गया है और भविष्य में भी दिया जाता रहेगा।

दुर्गा वाहिनी ने रुकवाई महिलाओं की नग्न चित्रों की प्रदर्शनी

विनोद बंसल
दिल्ली।

4 फरवरी को दक्षिणी दिल्ली के होज खास गाँव में लगी महिलाओं के शरीर को घिनौने ढंग से दर्शाती हुई लगभग ढाई सौ से अधिक चित्रों की प्रदर्शनी को दुर्गा वाहिनी ने बंद करा दिया। विश्व हिन्दू परिषद् की महिला शाखा दुर्गा वाहिनी की प्रांत संयोजिका संजना चौधरी ने नेतृत्व में गई छः सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने पहले उन सभी चित्रों को स्वयं देखा उसके बाद पुलिस को फोन कर गेलरी को बंद करा दिया। गेलरी से बाहर निकलने के बाद संजना ने बताया कि देश की राजधानी पहले से ही महिलाओं की सुरक्षा को लेकर चिंतित है ऐसे में महिलाओं के शरीर का इस प्रकार नंगा व बेहूदा प्रदर्शन न सिर्फ हमारी सांस्कृतिक मूल्यों को ध्वस्त करने वाला है बल्कि मलिाओं के विरुद्ध अपराधों को बढ़ाने वाला भी है। इसलिए इसे रोका जाना नितांत आवश्यक है। विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख विनोद ने बताया कि दुर्गा वाहिनी ने गेलरी के प्रारम्भ होने से पूर्व ही एक पत्र प्रदर्शन के आयोजकों को भेजा था जिसमें दिल्ली आर्ट गेलरी की वेबसाइट में दिखाई गई, उसी प्रदर्शनी का जिक्र करते हुए इसे न खोलने का आग्रह किया गया था। पत्र की प्रति केन्द्रीय गृह मंत्री, दिल्ली के उप राज्यपाल, मुख्य मंत्री शीला दीक्षित, पुलिस आयुक्त नीरज कुमार व दक्षिणी दिल्ली की मेयर सबिता गुप्ता को भेजी गयी थी। इसके अलावा पुलिस कंट्रोल रूम को भी अनेक दुर्गा वाहिनी कार्यकर्ताओं व महिला संगठनों ने फोन कर इसे बंद कराने का आग्रह किया था। शनिवार की सुबह हमें पुलिस ने ही सूचित किया था की प्रदर्शनी बंद करा दी गई है। किन्तु जब हमें पता चला कि रविवार प्रदर्शनी को पुनः खोल दिया गया है तो दुर्गा वाहिनी ने उसका दौरा कर बंद कराने हेतु पुलिस से संपर्क किया। प्रतिनिधि मण्डल में विहिप दिल्ली के उपाध्यक्ष दीपक कुमार के अलावा उषा नेचाल, हरप्रीत ढिल्लों, दीपा लालवानी, अनीता पालीवाल व सीमा ठाकुर शामिल थीं।

भजनोपदेश हेतु सम्पर्क करें

वेद प्रचार, बोध सप्ताहों तथा उत्सवों पर भजन मण्डली सहित प्रचार हेतु सम्पर्क करें।

पं. सतीश 'सुमन' व पं. सुभाष 'राही'

आर्यकुटी, मकान नं0 288, रामपुरी, रुड़की रोड, मुजफ्फरनगर-251001

मोबाईल नं0 - 09897302352, 09760895671

८१वें जन्म दिवस पर हार्दिक बधाई

श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी.), श्रीराम विज्ञान संकाय, श्रीराम पब्लिक स्कूल एवं श्रीराम पब्लिक इण्टर कालेज के संस्थापक, आर्य उप-प्रतिनिधि सभा व आर्यावर्त केसरी के संरक्षक, उदारचेता- दानवीर

श्रीराम जी गुप्ता

को उनके जन्म दिवस २ मार्च पर 'श्री' सम्पदा, सुकीर्तियुक्त स्वस्थ व शताधिक आयु की मंगलकामना के साथ हार्दिक बधाई देते हैं।

श्रीराम सेवा ट्रस्ट (पंजी.) व आर्यावर्त केसरी परिवार

समाज सेवा के लिए अर्जुनदेव चड्ढा सम्मानित

अर्जुन देव चड्ढा को सम्मानित करते स्वायत्त शासन मंत्री- शांति धारीवाल व जिलाधिकारी राकेश जायसवाल- केसरी।

आर्यत्व के प्रति समर्पित हैं अर्जुन देव चड्ढा

डॉ. के. एल. दिवाकर
कोटा।

भारतीय गणतंत्र की 64वीं वर्षगांठ पर स्टेडियम में आयोजित समारोह में समाजसेवी अर्जुनदेव चड्ढा को सम्मानित किया गया। स्वायत्तशासन मंत्री शांति धारीवाल के हाथों चड्ढा को उनके समाजसेवा में उल्लेखनीय कार्य किए जाने के लिए यह सम्मान दिया गया।

उल्लेखनीय है कि विभाजन की त्रासदी और संघर्षों में पले बढ़े चड्ढा ने बचपन से ही समाजसेवा को अपने जीवन का आधार बना लिया था। नशामुक्ति, कुष्ठरोगी सेवा, निशक्तजन सेवा, सेरीब्रल पॉल्सी जागरूकता, वृद्धजन सेवा, रक्तदान, नेत्रदान के कार्यों से वे निरंतर जुड़े रहे हैं। शोषित, पीड़ित, गरीब तथा असहाय लोगों की सेवा के लिए वे सदैव तत्पर रहे हैं। चड्ढा ने पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पढ़ाई को अधूरा छोड़कर पहले राणा प्रताप सागर और फिर डीसीएम की एसएफसी ईकाई का कार्य ग्रहण किया। यहीं से सर्वांगीण विकास एवं सर्व कल्याण की भावना को सही अर्थों में एक प्रभावी आकार मिला। निर्धन, निराश्रित एवं जरूरतमंद बच्चों में टॉफियां, खिलौने बांटने हों या शोषित महिलाओं को देखकर कोई भी व्यक्ति कह सकता है कि चड्ढा कोई व्यक्ति नहीं बल्कि व्यक्तियों का एक समूह है।

एक कर्त्तव्यनिष्ठ आर्यसमाजी के रूप में उनका मानना है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज ही समाज में इस हवन कुण्ड का निर्माण कर सकता है। जिसमें समाज की कुरीतियों यथा जाति प्रथा, दहेज प्रथा, बालविवाह, छूआछूत, असमानता और अन्ध-विश्वासों को हवन किया जा सकता है। इससे समाज परिमार्जित होगा तथा सर्वकल्याण और सर्वसुखों की धराभूमि बनेगा। वहीं दूसरी ओर चड्ढा एक कुशल श्रमिक नेता के रूप में हड़ताल, तोड़फोड़ आदि कार्यविधियों को अपनाने के बजाए सौहार्दपूर्ण वातावरण में श्रमिकों को उनके अधिकार, वेतनमान एवं सुविधाएं बातचीत के माध्यम से दिलाने में सफल रहे हैं। सेवानिवृत्ति के पश्चात भी अपने मजदूर साथियों से उनका भावनात्मक जुड़ाव इस बात का द्योतक है कि वे अपने अभिन्न साथियों की पीड़ा को पूरी गहराई से समझते हैं। वे कभी अपने नैतिक दायित्वों से अलग नहीं हुए। एड्स जैसे लाइलाज रोग, जिसका बचाव ही एकमात्र उपचार है, के संबंध में जागरूकता के निर्माण हेतु चड्ढा 1992 से निरंतर कार्यरत हैं। उन्हें क्षेत्र में एड्स जनचेतना का पर्याय कहा जा सकता है। इस कार्य को भी चड्ढा एक सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में करते हैं। इस कार्य को भी चड्ढा एक सामजिक जिम्मेदारी के रूप में करते हैं। सेवा उनके लिए कोई शब्द, संदेश या उपदेश मात्र नहीं, बल्कि एक सक्रिय कार्य है, एक निरंतर क्रियान्वयन है। चड्ढा स्वयं तो नेत्रदान की घोषणा कर ही चुके हैं, लेकिन इससे पहले 1987 में अपने माता-पिता फिर पत्नी एवं हाल ही में अपने बड़े भ्राता का मरणोपरांत नेत्रदान कर सूनी आंखों में रोशनी के लिए अलख जगा चुके हैं। इन्होंने इस संबंध में लोगों की भ्रांतियों को भी दूर किया है। चड्ढा ने स्वयं 44 बार तथा इनके दोनों पुत्रों ने क्रमशः 22 बार और 34 बार रक्तदान किया। भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं के समय उनके द्वारा किए गए कार्य ने उन्हें मानवता का सच्चा हमदर्द सिद्ध किया व पंजाबी समाज के प्रति दायित्व को विस्तार दिया है। इन उल्लेखनीय कार्यों के लिए चड्ढा को विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय-समय पर सम्मानित किया गया है। असीमित ऊर्जा से भरपूर चड्ढा का हॉलेण्ड में भी सम्मान किया जा चुका है। उम्र के 69 बसंत देख चुके चड्ढा का समाजसेवक के रूप में नाम है। उसी को जिला प्रशासन की ओर से यह सम्मान दिया गया है।

आर्यसमाज, कोटा के जिला प्रधान श्री चड्ढा को विधायक ओम बिरला, चन्द्रकांता मेघवाल, महापौर रत्ना जैन, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह कौशल, पूर्व विधायक पूनम गोयल, पंकज मेहता, डॉ. जफर मोहम्मद, नेता प्रतिपक्ष बृजमोहन सेन, अरविंद सिसौदिया, अशोक माहेश्वरी, विवेक राजवंशी, जगदीश राजावत, राम जे भाटिया, डॉ. साकेत गोयल, डॉ. कुलवंत गौड, डॉ. केएल दिवाकर, डॉ. केवल कृष्ण डंग, डॉ. मुकेश मोहन दाधीच, डॉ. संजय जायसवाल, डॉ. संजय मलिक, डॉ. सीएस त्रिपाठी, डॉ. केजी दायमा, सत्यपाल आर्य, एमएल पाटौदी, तरूमीत सिंह बेदी, पं. शोभाराम आर्य, यज्ञदत्त हाडा, नरेन्द्र कुमार बारां, कर्नल आरएन जैन, पुरूषोत्तम माहेश्वरी, प्रकाश जायसवाल, ललित मेरा, मधु निझावन, किशोर मदनानी, स्नेहलाता चड्ढा अग्निमित्र, जेएस दुबे ने बधाई दी है।

गरीब बच्चों को कपड़े पहनाते आर्यसमाज, कोटा के पदाधिकारी- केसरी।

झुग्गी-झोपड़ियों में जाकर बच्चों को पहनाए गर्म कपड़े

अरविन्द पाण्डेय
कोटा।

आर्य समाज जिला सभा का एक दल जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा की अगुवाई में पंडित रामदेव शर्मा, अरविन्द पाण्डे, रामप्रसाद याज्ञिक, श्योराज वशिष्ट, राजीव आर्य के साथ मल्टीपरपज परिसर गुमानपुरा में स्थित झुग्गी झोपड़ियों में पहुंचा। इन झोपड़ियों में मामा भील श्रमिक परिवार रहते हैं जो मध्य प्रदेश के आदिवासी इलाकों से कोटा आकर मेहनत मजदूरी करके, परिवार का भरण पोषण करते हैं। इनके पास ओढने बिछाने के सीमित साधन हैं, बच्चों के तन पर भी गर्म कपड़े नहीं हैं। बढ़ती सर्दी को देखते हुए आर्य समाज जिला सभा द्वारा इस बस्ती के 6 माह से 12 वर्ष तक के बच्चों को गर्म कपड़े दिये गए।

जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने स्वयं बच्चों के बीच बैठकर उन्हें कपड़े पहनाए। बच्चे पहले तो संकुचाए परन्तु जब बच्चों को अपनापन मिला तो चड्ढा के साथ घुल मिल गए, कुछ बच्चे तो चड्ढा की गोद में बैठ गए। अरविन्द पाण्डे व रामदेव शर्मा ने बस्ती के लोगों को स्वच्छ रहने के लिए प्रेरित किया। रामप्रसाद याज्ञिक व श्योराज वशिष्ठ न बच्चों को शिक्षित करने के लिए जोर दिया। बस्ती के सरना मामा भील ने आर्य समाज का आभार जताया।

पाक हमलों के विरूद्ध प्रर्दशन

विनोद बंसल
दिल्ली।

9 जनवरी को पाकिस्तान द्वारा भारतीय सीमा पर हमलों व वहां रह रहे हिन्दुओं को प्रताड़ित किए जाने के विरूद्ध विश्व हिन्दू परिषद के कार्यकर्ताओं ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। विहिप दिल्ली के महामंत्री सत्येन्द्र मोहन ने राजधानी की जनता से अधिकाधिक संख्या में इस प्रदर्शन में भाग लेने पर धन्यवाद के साथ प्रदर्शन के बाद देश के राष्ट्रपति को एक ज्ञापन भी दिया। विहिप दिल्ली के मीडिया प्रमुख विनोद बंसल ने बताया कि पाकिस्तान द्वारा भारतीय सीमा पर हमले और हमारे सैनिकों के शहीद होने की घटना को गंभीरता से लेते हुए आज झण्डेवालान स्थित विहिप कार्यालय में हुई बैठक में पाकिस्तान की इस करतूत की तीव्र निंदा की गई तथा शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई। अगले दिन समस्त देशवासियों की ओर से जंतर-मंतर पर प्रदर्शन कर भारत सरकार को आगाह किया कि वह अब अपना मौन तोड़कर पौरुष का परिचय दे और पाकिस्तान को सबक सिखाए।

बैठक में विहिप के प्रान्त उपाध्यक्ष महावीर प्रसाद, दीपक कुमार, सरदार उजागर सिंह, वृज मोहन सेठी व गुरदीन प्रसाद रुस्तगी, मंत्री राम पाल सिंह, संगठन मंत्री करूणा प्रकाश, प्रान्त मातृ शक्ति संयोजिका सिम्मी आहूजा व दुर्गा वाहिनी संयोजिका संजना चौधरी सहित अनेक विहिप पदाधिकारी उपस्थित थे।

छात्रा की आत्मा की शान्ति के लिए शान्ति किया यज्ञ

कोटा। दिल्ली में गैंग रेप से पीड़ित छात्रा की मृत्यु पर आर्य समाज कोटा ने छात्रा की आत्मा की शान्ति के लिए ब्राइटलैण्ड स्कूल, गायत्री विहार में शान्ति यज्ञ किया। इस अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि इस घटना के अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिले जिससे दूसरे अपराधी भी अपराध करने की सोच न सकें। घरों में सभी को ऐसी शिक्षा व संस्कार मिले जिससे इस प्रकार की प्रवृत्ति पैदा न हो। आर्य समाज गायत्री विहार के प्रधान अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि छात्रा का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा, इस बलिदान से देश जाग चुका है, इस बलिदान से कड़े कानून बनेंगे तथा अपराधी प्रवृत्ति पर अंकुश लगेगा। महिला पंतजलि योग समिति की महामंत्री डॉ. मंजु मेहता ने कहा की महिलाओं को अपनी सुरक्षा स्वयं करनी पड़ेगी। आज भ्रष्टाचार के साथ दुराचार भी बढ़ रहा है। योग के द्वारा दुराचार की प्रवृत्ति को समाप्त किया जा सकता है। बालिकाओं को अपनी सीमा समझनी चाहिए, हमेशा सतर्क रहना चाहिए तथा विद्यालय व घरों में नैतिक शिक्षा पढ़ाई जानी चाहिए। इस अवसर पर प्रधान कैलाश बाहेती, आर्य समाज तलवंडी के प्रधान रघुराज सिंह, विद्वान रामप्रसाद याज्ञिक, पूर्व प्रधान जे. एस. दूबे, वैदिक विद्वान डॉ. के.एल. दिवाकर, पुरोहित श्योराज वशिष्ठ, पूर्व मंत्री प्रेमनाथ कौशल, आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी, मनुभाई आड़े, पतंजलि योग समिति के संरक्षक भारत भूषण सिंघल, मलय बनर्जी, राम गोपाल मीणा आदि उपस्थित थे।

नवजागरण के महान पुरोधा

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती (१८२४-१८८३) राष्ट्रीय नवजागरण के महान पुरोधा थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'भारत भारतीयों के लिए है' का नारा बुलन्द करते हुए 'स्वराज्य' का सर्वप्रथम उद्घोष किया। उन्होंने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की और भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को एक नई दिशा प्रदान की। वे राष्ट्रीय आन्दोलन की उग्रवादी तथा क्रान्तिकारी धारा के सूत्रधार थे। उन्होंने राष्ट्रवादी पत्रकारिता के अभ्युदय तथा विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भारत में स्वतंत्रता संग्राम और स्वदेशी पत्रकारिता एक-दूसरे के समकालिक हैं, तथा महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और भारत की स्वदेशी पत्रकारिता एक-दूसरे के पर्याय से प्रतीत होते हैं। ये एक-दूसरे के पूरक, सहायक व उत्प्रेरक हैं। स्वतंत्रता संघर्ष का इतिहास जहां त्याग, तपस्या व बलिदान से परिपूर्ण हैं वहीं प्रेस का इतिहास भी राष्ट्रीयता से ओतप्रोत है क्योंकि दोनों ने ही मातृभूमि की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व होम करने में कोई भी कोर कसर बाकी नहीं छोड़ी थी। भारतवासियों में देशभक्ति, राष्ट्रसेवा और भारत की प्राच्य सभ्यता व संस्कृति पर गर्व करने के भाव महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज के प्रभाव से ही उत्पन्न हुए और यही विषयवस्तु प्रेस की भी रही। महर्षि दयानन्द १९वीं शताब्दी के प्रमुख सुधारक थे। उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने देशवासियों में राष्ट्रीयता की अपूर्व उमंग उत्पन्न की। उन्होंने जनमानस में देशभक्ति, स्वदेशी, स्वराज्य व स्वत्व का मान जागृत किया। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही सर्वप्रथम स्वराज्य का उद्घोष किया तथा स्वदेशी, स्वभाषा, स्ववेशभूषा व स्वत्व का संदेश देते हुए भारत के जन-जन में अभूतपूर्व राजनीतिक चेतना का संचार किया। यही कारण है कि 'भारत के स्वतंत्रता समर में भाग लेने वाले पिच्चासी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाजी थे।' आर्यसमाज व महर्षि दयानन्द का स्वाधीनता प्राप्ति का मार्ग उदारवादी न होकर सर्वस्व समर्पण, त्याग व बलिदान से विभूषित उग्रवादी अथवा आक्रामक था। इसी से प्रेरित होकर राष्ट्र के महान जांबाजों की एक लम्बी श्रृंखला राष्ट्र की बलिवेदी पर होम हो गयी। आर्यसमाज के मंतव्यों में क्षेत्रवाद के स्थान पर समग्रता का भाव सन्निहित है। आर्यसमाज व्यक्ति विशेष, क्षेत्र या देश विशेष की सीमाओं से मुक्त विश्व के कल्याण व जीवमात्र के उत्थान का पक्षधर है। अपनी प्रारम्भिक विचारधारा से ही इस महान संस्था ने लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता, बन्धुता व अन्तर्राष्ट्रवाद की शिक्षा दी। इसी कारण आर्यसमाज से प्रेरित अथवा संबद्ध स्वदेशी प्रेस ने अपने लेखन, प्रकाशन व सम्पादन में इन्हीं मूल मंत्रों का सस्वर पाठ किया। युगप्रर्वतक महर्षि दयानन्द को शत् शत् नमन।

जनवाणी

अधिकार को नहीं, कर्तव्य को प्राथमिकता दें

महोदय,

भारतीय संविधान अभारतीय परिस्थितियों में अन्य देशों के संविधान से लेकर बनाया गया। जबकि इस देश में प्राचीन काल से गणतन्त्र की तथा निर्वाचन की पद्धति रही है।

इस संविधान की सबसे बड़ी विसंगति यही है कि अब तक सैकड़ों संशोधन कर भी यह ठीक नहीं हो पाया है। शिक्षा 1840 में बनाये मैकाले के कानून से संचलित है जिसमें निस्वार्थ भावना, देश प्रेम और आध्यात्म के लिए कोई स्थान नहीं है।

भूमि अधिग्रहण कानून, इण्डियन पेनल कोर्ड (आईपीसी) इण्डियन फोरेस्ट एक्त इण्डियन पुलिस एक्त अंग्रेजों के बनाये चल रहे है। जबकि साम्प्रदायिक हिंसा रोक थाम विधेयक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् द्वारा प्रस्तुत किया गया है। जिससे बहुसंख्यक जेलों में सड़ेगें।

आज हम वर्तमान व्यवस्था का विश्लेषण करते है तो पाते है कि तंत्रगण पर हावी हो गया है आम जन असाहय है नैतिकता व जीवन मूल्यों का पतन हो चुका है मताएं बहने असुरक्षित सहित कोई भी सुरक्षित नहीं है। जातिवाद सम्प्रदायवाद तुष्टिकरण भ्रष्टाचार ने देश की एकता अखण्डता को खोखला कर दिया है। सर्वत्र अधिकार की पुकार है कर्त्तव्य की कोई चर्चा नहीं कर रहा।

होली या होलिका दहन

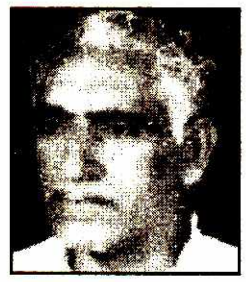

डॉ० अशोक आर्य

भारत देश प्राचीन काल से ही प्रेरणा का स्रोत रहा है। यहां समय समय पर प्रेरणा प्राप्त करने के लिए अनेक त्योहारों का सहारा लिया जाता है। ये त्योहार भी किसी विशेष घटना से संबन्धित होते हैं। जिस घटना से जिस त्योहार का संबन्ध होता है, वह घटना ही किसी अच्छी घटना से जुड़ी रहती है। यह अच्छाई शताब्दियों पर्यन्त जनमानस को अपना उदाहरण देते हुए हमारा मार्गदर्शन करती रहे, इस निमित्त हमारे पूर्वजों ने उसे त्योहार का रूप दे दिया, जिससे प्रतिवर्ष हम मनाकर उयसे प्रेरणा प्राप्त करते रहें। ऐसे ही त्योहारों में होली पर्व भी एक है। कुछ लोग इस पर्व को राजा हिरण्यकश्यप से जोड़ते हुए इसी प्रकार आरम्भ होना मानते हैं, जिस प्रकार दीपावली को माना जाता है। कुछ लोग इसे प्रेम का, मिलन का, स्नेह का पर्व मानते हैं तथा इसके लिए शब्द भी यही प्रयोग करते हैं, "बुरा न मानो होली है", तो कुछ इसे ऋतु परिवर्तन के साथ भी जोड़ते हैं। कुछ अन्य तो इसे महाभारत से भी जोड़ते हैं, जबकि अन्य लोगों का मानना है कि इस पर्व का संबन्ध नयी फसल के आगमन से है। वास्तव में मार्च का महीना पर्वों का महीना कहा जाता है। इस महीने में पर्वों का बाहुल्य होता है। आओ हम सब मिलकर इन सब पहलुओं का विश्लेषण करते हुए इस पर्व के महत्व पर प्रकाश डालें।

मिलन का पर्व :-

होली को मिलन के पर्व के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन सब लोग एक दूसरे पर रंग व गुलाल डालकर खुशी मनाते हैं। गले मिलते हैं, मिल-बैठकर खाते हैं। इससे सबका आपसी मनोमालिन्य धुल जाता है। वैमनस्य दूर हो जाता है। पिछले समय में हुए झगड़ों की नाराजगी समाप्त हो जाती है, तथा फिर से मैत्री की भावना यह कहते हुए "जो होली, सो होली" बलवती होती है। इस कारण इसे मिलन के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है।

नई फसल का त्यौहार :-

बैसाखी के ही समान कुछ लोग होली को भी नयी फसल का त्योहार मानते हैं। ऐसे लोगों का मानना है कि जब फसल पकने की तैयारी में होती है तथा किसान को लम्बी मेहनत के पश्चात् फसल के पकने तक का यह थोड़ा सा समय खाली मिलता है। इस समय वह अपनी थकावट को मिटाने की इच्छा रखता है। इस इच्छाशक्ति का परिवर्तन स्वरूप ही होली है। अपनी थकावट को उतारने के लिए वह खूब हंसता है, गाता है, मित्रों, सगे-संबन्धियों को मिलता है, ताकि आने वाली फसल को बेचने पर जो धन सम्पदा घर पर आने वाली है, उसके सदुपयोग की भी कोई योजना बनायी जा सके। उन लोगों को भी समय, खाली होने के कारण मिलता है, जिनसे उनका संपर्क नहीं रहा होता। पुराने शिकवे दूर कर, बिछुड़ों से तो मेल-मिलाप पुनः होता ही है, साथ ही कुछ नये लोगों से भी संपर्क बढ़ता है।

कंस से स्वाधीनता का प्रतीक :-

कुछ लोगों का मानना है कि मथुरा के राजा कंस से जनसामान्य अत्यधिक भयभीत था। कंस के अत्याचारों को सह पाना कठिन था, परन्तु उसके अत्याचारों की चर्चा करना भी उस काल में खतरनाक माना जाता था। उसके अत्याचारों की पराकाष्ठा उस समय हो गयी, जब उसने अपनी ही बहन व बहनोई को जेल में डाल उनकी संतानों को जन्म लेते ही वध करने लगा तथा अत्याचार पराकाष्ठा की सीमाएं भी उस समय पार हो गयीं, जब उसने बालक कृष्ण के नाम पर अपनी सत्ता के क्षेत्र के सभी बालकों को खोजकर वध किया जाने लगा। जिस दिन कंस का वध हो गया, तो लोगों की खुशियों की कोई सीमा न रही। इस खुशी को प्रकट करते हुए लोगों ने होली खेलते हुए एक दूसरे को मिलना आरम्भ किया। ब्रज क्षेत्र में आज भी यह होली पर्व उसी पुराने रूप में मनाया जाता है। बरसाने की लठमार होली की तो दूर दूर तक चर्चा रहती है।

ऋतु परिवर्तन का प्रतीक :-

कुछ लोगों का मानना है कि यह त्योहार बसंत के ही समान ऋतु परिवर्तन का भी प्रतीक है। ऐसे लोगों का कथन है कि लम्बी ठण्डी ऋतु के पश्चात् मौसम, परिवर्तन की ओर बढ़ रहा होता है। इस समय धूप इतनी गर्म हो जाती है, जो शरीर को सहन नहीं होती, किंतु छाया में बैठें, तो ठण्डी का अनुभव होता है। शरीर ठण्डा सहन करने का आदी हो चुका होता है। इस कारण धूप की गर्मी शरीर सहन नहीं कर पाता, किंतु ठण्डी छाया में भी बैठना शरीर सहन नहीं करता। इसलिए शरीर को सामान्य अवस्था में लाने के लिए शरीर पर पानी व रंग डालने की परम्परा आरम्भ हुई, जिसे आगे चलकर होली का नाम देकर भारतीय त्योहारों में सम्मिलित कर लिया गया। इस प्रकार यह पर्व ऋतु परिवर्तन का भी संकेत करता है।

हिरण्यकश्यप के अत्याचारों से मुक्ति का प्रतीक :-

होली को मुख्यतः मुल्तान के राजा हिरण्यकश्यप के अत्याचारों से मुक्ति स्वरूप उसकी बहिन होलिका के जल मरने के समय खुशी के रूप में मनाने की परम्परा से इसका आरम्भ मानते हैं। राजा हिरण्यकश्यप की राक्षसी प्रवृत्ति से जनसामान्य बेहद दुखी था। उसके अत्याचारों से भयभीत जनता में उसके विरुद्ध आवाज उठाने का साहस न था। अत्याचारों की पराकाष्ठा को देख इस राजा के अपने ही राजकुमार में इन अत्याचारों को समाप्त कराने की उत्कृष्ट इच्छा शक्ति जाग्रत हुई। उस बालक ने प्रभु का नाम लेते हुए अपने पिता के प्रत्येक अत्याचार का विरोध किया। इस विरोध से राजा का क्रोध और भी भड़क उठा। क्रोध से पागल अहंकारी राजा के अहंकार को और भी बढ़ा दिया, जिससे न्याय व अत्याचारों के विरोध में अड़ने वाले बालक को समाप्त करने के लिए अंधा कर दिया। अहंकारी राजा अच्छे व बुरे की, न्याय व अन्याय की परिभाषा को ही भूल गया। वह अपने आदेश को ही ईश्वर की आज्ञा मानने लगा। इस सबके परिणाम स्वरूप उसने अपने पुत्र प्रहलाद को सख्ती से समझाते हुए अपना रास्ता छोड़ देने को कहा, किंतु सत्य पर चलने वाला कभी अपने मार्ग से, अपने निश्चय से भटका नहीं करता। वह राजकुमार भी दृढ़ निश्चयी था। इस कारण सत्य के, न्याय के मार्ग पर आने वाली चुनौती को स्वीकार करते हुए पिता के क्रोध की चिंता किये बिना जनसामान्य को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए डट गया। परिणामस्वरूप राजा ने अपने ही बेटे पर अनेकानेक अत्याचार करने के पश्चात् उसे अपने मार्ग से सदा-सदा के लिए हटाने का निर्णय लिया। उसने अनेक योजनाएं बनायीं, अपने ही बेटे को समाप्त करने के लिए, परन्तु जिसे जनसामान्य, यहां तक कि गुप्त रूप से राजकर्मियों का भी समर्थन प्राप्त हो, उसे कौन मार सकता है। इस कारण मृत्यु के इस खेल में राजा की प्रत्येक बार पराजय तथा राजकुमार की विजय होती थी।

अन्त में अहंकार में अंधे इस राजा ने एक योजना बनायी। अपनी बहन को एक ऐसा वस्त्र दिया, जो अग्नि में भी न जलता था। उसे आदेश दिया गया कि वह इस वस्त्र को ओढ़कर, बालक को गोद में ले, आग में बैठ जावे, किंतु उसे वस्त्र से बाहर रखे, ताकि वह स्वयं तो बच जावे, किंतु बालक जलकर मृत्यु को प्राप्त हो। सत्य घटना का तो आज अनुमान ही लगाया जा सकता है।

शेष पृष्ठ १० पर...

आर्यसमाज परिसर केरल में यज्ञ का एक दृश्य - केसरी।

प्रथम पृष्ठ के शेष...धर्म का मूल है वेद........

अब तो पुराणों से कार्य चलाना होगा। तब स्वामी जी ने कहा कि तुम्हारे आलस्य व प्रमाद से वेद उपलब्ध नही हैं। स्वामी दयानन्द के कारण आज वेद की शिक्षा कन्या गुरुकुल में होती है यद्यपि नारियों को आर्य, वेद विदुषि बनाने में आर्य समाज को भी 75 वर्ष लग गये। पहली आर्य विदुषी डॉ. प्रज्ञा देवी 1968 में विद्यावाचस्पति हो पायीं। आचार्य जी ने कहा कि अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों में मानवीय उपाधि हैं। प्रसिद्ध वैदिक प्रवक्ता वीरेन्द्र कुमार शास्त्री ने कहा कि सुख तो सब चाहते हैं लेकिन सुख का मूल कोई नहीं जानता, जबकि मूलशंकर (दयानंद) ने मूल तक पहुंचने का कार्य किया। वेद धर्म का मूल है और वेद का मूल परमात्मा है। धर्म को परमात्मा स्थापित करता है। वेद ने कहा है कि जुआ मत खेलो, खेती करो। जबसे वेद की बात नहीं मानी, भारत का पतन हो गया, महाभारत हुआ। आज की समस्या चरित्रहीनता, भ्रष्टाचार, आतंकवाद का समाधान वेद अपनाने में ही है। आर्य भजनोपदेशक सतीश सत्यम ने सुन्दर-सुन्दर भजनों से समा बांध दिया। गोकुलदास डिग्री कालेज की प्राचार्या ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कृत और संस्कृति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कहा कि मातृशक्ति भारत में सदा से ही सम्मानित रही है। आज सामाजिक जागरुकता के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या और सामाजिक अपराध को नेस्तानाबूत करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर प्रधान सुधा आर्या और मंत्री संतोष आर्या ने स्त्री आर्य समाज की स्मारिका का लोकार्पण किया।

पृष्ठ-६ का शेष... होली या होलिका.........

इस अनुमान के आधार पर दो विचार सामने आते हैं। प्रथम राजा की बहिन बालक को बहुत चाहती थी, यहां तक कि वह उसके लिए अपनी जान तक देने को तत्पर थी, किंतु राजा के भय से इसे प्रकट नहीं करती थी। इस कारण जब चिता से ऊँची- ऊँची लपटें निकलने लगीं, तो उसने अपने दिल को मजबूत कर, बड़ी सावधानी से वह वस्त्र, जो आग में जलता नहीं था, बालक के ऊपर डाल दिया होगा और स्वयं अपना शरीर त्याग गयी होगी। द्वितीय- उस समय के राजकर्मी भी इस दुष्ट राजा से मुक्ति चाहते थे। इस कारण उन्होंने बड़ी सावधानी से जलाने वाले वस्त्र तो बालक को पहना दिये, तथा होलिका को साधारण वस्त्र यह कहते हुए दे दिये कि ये जलेंगे नहीं। (इस संबन्ध में जो पौराणिक आख्यान आता है, उसे हम नहीं मानते, इस कारण उसका यहां उल्लेख नहीं करते)। बस फिर क्या था, चिता में आग भड़कने के साथ ही राजा तो इस विश्वास के साथ लौट आया कि बालक जल जावेगा तथा बाद में उसकी बहन चिता से निकलकर लौट आवेगी। जब लोगों ने लपटों में से भक्त बालक को सुरक्षित निकलते हुए देखा तथा होलिका को जला हुआ पाया, तो लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा तथा उन्होंने महलों में निश्चिंत पड़े राजा पर भी अकस्मात आक्रमण कर दिया। राजा को समझने व सोचने का अवसर ही न मिला होगा कि लोगों ने उसका भी वध कर दिया होगा। जो भी हो, चिता से बालक जीवित निकला, तो लोगों की खुशी देखते ही बनती थी। वे बालक का सत्कार करने लगे तथा चिता की राख को एक दूसरे पर डालने लगे। इसी परम्परा को प्रतिवर्ष इसी दिन दोहराया जाने लगा। धीरे धीरे यही परम्परा आज की होली बन गयी। राख का स्थान गुलाल ने ले लिया और पानी का स्थान रंगों ने ले लिया। इसके साथ ही उस पुरानी परम्परा को जीवित रखने के लिए आज भी होलिका का दहन किया जाता है तथा इसकी राख से भी खेला जाता है। आज भी लोग उसी प्रकार एक-दूसरे को मिलते हैं। खुशी प्रकट करते हैं, बैर-विरोध भुलाकर खूब खेलते हैं, जिस प्रकार इस दिन बालक को चिता में से जीवित पाकर खुशी से झूम उठे थे। इस त्योहार को मनाते हुए आज कुछ उच्छृंखलता बढ़ने लगी है, जिससे कई बार दुर्घटनाएं हो जाती हैं। दुकानदारों को चाहिए कि नकली रंग न बेचें तथा खेलने वाले भी किसी को कष्ट पहुंचाने वाले कार्य न करें, ताकि त्योहार की खुशी बनी रहे।

मण्डी डबवाली, जिला- गाजियाबाद

बसंत पंचमी का कार्यक्रम आयोजित

अशोक रस्तोगी
अफजलगढ़ (बिजनौर)

जैन सरस्वती शिशु एवं विद्या मन्दिर में बसंत पंचमी का पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ज्ञान की देवी मां सरस्वती की वन्दना से किया गया। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य पं. रोहताश शास्त्री ने व पं. नवनीत शर्मा ने हवन किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य ब्रजभूषण भारद्वाज ने बसंत पंचमी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज का दिन ज्ञान की देवी मां सरस्वती का जन्मदिन माना जाता है, इसलिए यह दिन हमारे लिए बड़े महत्व का दिन है। आज के दिन से बसंत ऋतु प्रारम्भ हो जाती है। जिसमें पेड़, पौधों से लेकर सभी प्राणियों में नई चेतना आ जाती है। खेतों में सरसों फूलने लगती है। जिसके पीले-पीले फूल धरती माता की ओढ़नी के सदृश लगते हैं, और उसके नीचे गेंहू की हरियाली मां की साड़ी के सदृश लगती है। विद्यालय के आचार्य गुलाब सिंह ने बताया कि इस दिन से और भी अनेक घटनाएं जुड़ी हैं, जैसे वीर हकीकतराय, जिसने देश धर्म की रक्षा हेतु अपना बलिदान कर दिया था। प्रकृति के ये लाल-लाल फूल आज हमें उस बीर बालक के त्याग की याद दिलाते हैं, जो अपने देश धर्म की रक्षा हेतु अपना बलिदान कर देते हैं।

आर्यावर्त केसरी के मान्य सदस्यों की सेवा में
सदस्यता- सहयोग हेतु विनम्र निवेदन

(सम्मानित सदस्य संख्या......................)

मान्यवर महोदय, सादर-सप्रेम नमस्ते!

आशा है, सपरिवार स्वस्थ व सानन्द होंगे। आपकी सेवा में **आर्यावर्त केसरी** निरंतर भेजा जा रहा है- मिल रहा होगा।

हमें विनम्रतापूर्वक यह अनुरोध करना है कि आपकी **सदस्यता सहयोग राशि** माह........................ में समाप्त हो रही है। कृपया अपना **वार्षिक/द्विवार्षिक/आजीवन** अथवा **संरक्षक सदस्यता सहयोग** क्रमशः **रु० 100/-, 200/-, 1100/-** अथवा **3100/-** स्व सुविधानुसार भेजने का कष्ट करें। सहयोग राशि **धनादेश** के द्वारा अथवा आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा के खाता सं0 **30404724002** अथवा सिंडिकेट बैंक के खाता सं0 **88222200014649** में जमा करा सकते हैं। **कृपया सहयोग राशि जमा करने पर हमारे दूरभाष संख्या-05922-262033 अथवा चलभाष संख्या-08273236003 पर अवश्य सूचना देने का कष्ट करें।** आशा है पूर्व की भांति सदैव सहयोग व सद्भाव बनाए रखेंगे। हार्दिक धन्यवाद के साथ-

डॉ० अशोक कुमार आर्य- सम्पादक, आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ.प्र.) चल. : 09412139333

प्रवेश सूचना (सत्र : 2013-14)

छठी कक्षा (आयु 9 से 11वर्ष) एवं सांतवी कक्षा (आयु 10 से 12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण-पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपये) भरकर 31.03.2013 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा कराएं। (पंजीकरण-पत्र डाक विभाग द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।) कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 07 अप्रैल 2013 दिन रविवार को प्रातः 8.00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एंव स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

सत्यानंद मुंजाल - कुलपति

आर्य कन्या गुरुकुल

(पंजाब का एकमात्र कन्या गुरुकुल)
शास्त्री नगर, लुधियाना-141002 दूरभाष-0161-2459563

व्याधि निवारण परामर्श-पत्रक

नाम.................................पता...
....लिंग..............वजन..............आयु.............
रोग समस्या का विस्तृत विवरण..
यदि कोई बीमारी पहले थी, उसका विवरण....................................
भोजन ठीक समय से लेते हैं या नहीं..
नींद की स्थिति...
कौन सी वस्तु ज्यादा खाते हैं...................... मीठा/नमकीन/खट्टा/कड़वा
शाकाहारी या मांसाहारी..
शौच की स्थिति...
मानसिक स्थिति..
वर्तमान में रोग...
अन्य कोई विवरण..
दिनांक......................

आपको निरोगी होना चाहिए यह हमारा उद्देश्य है। अतः आप इस नयी योजना का लाभ उठाये, आपको शीघ्र उत्तर दिया जायेगा। यदि पूरी बात प्रोफार्मा में न आये तो अलग से पत्र लिख सकते हैं। प्रोफार्मा को भेजते समय अपने अभी तक के इलाज के पर्चे व जांच रिपोर्ट की फोटो कापी अवश्य भेजें। यदि आप इस प्रोफार्मा को भरकर एवं साथ में 5/- का डाक टिकट नहीं भेजते हैं तो उत्तर देना संभव नहीं है।

प्रोफार्मा भेजने का पता-
डॉ. सत्य प्रकाश गुप्ता
गली नं. - A/1 आदर्श नगर, नजीबाबाद
जिला- बिजनौर, उत्तर प्रदेश-२४६७६३
दूरभाष- 09759981474
पर सम्पर्क का समय केवल
शाम ७ से ८ बजे तक

जीवन के कृष्ण और शुक्ल पक्ष

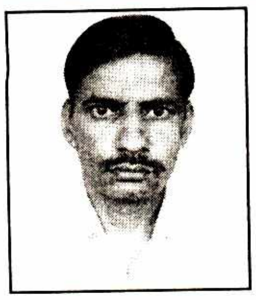

सुमन कुमार वैदिक

हमारे यहां माह में दो पक्ष माने जाते हैं कृष्ण और शुक्ल पक्ष। अन्धकार का पक्ष जब चन्द्रमा पूर्णिमा के पश्चात् आमावस्या की ओर जाता है, कृष्ण पक्ष जिसमें प्रतिपदा से बढ़ता हुआ चन्द्रमा पूर्णिमा तक पहुंचता है शुक्ल पक्ष इसी प्रकार मानव के जीवन में दो पक्ष होते हैं एक महान अन्धकार की दूसरे उज्ज्वल रहने की। जब हमारे जीवन में अनेक आपत्तियाँ, अज्ञान होता है वह काल कृष्ण पक्ष कहलाता है अत: इस काल में हमें दृढ़ रहते हुए यह चिन्तन करना चाहिए कि आगे यह समय भी नहीं रहेगा। यदि घबराकर उस आपत्ति काल में हम अपनी मर्यादा या जीवन को समाप्त करते हैं तो यह विशेषता नहीं। ऐसे काल में अशान्त न होते हुए अपने कर्त्तव्यों पर और धर्म पर दृढ़ रहते हुए मर्यादा पर चलना चाहिए आपत्तियां आने पर उसे सहन करना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहने वाला एक समय अपनी समस्याओं से निकल कर अपने जीवन को उच्च बना लेता है। उसके जीवन में शुक्ल पक्ष आ जाता है जिस प्रकार कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहता हुआ शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा का चन्द्रमा बन जाता है। रात्रि रूपी अहिल्या का भोग कर पृथ्वी को प्रकाशित कर देता है। आज अशान्ति है, राजा प्रजा राष्ट्र सभी अशान्त हैं ऐसे वातावरण में उत्थान नहीं होता जब उसे आत्मिक शान्ति मिलती है तभी उसका उत्थान होता है। ज्ञान का मार्ग आत्मिक शान्ति पाने का माध्यम है जो वेद की विद्या से आती है जिसे परमात्मा ने प्रकाशित किया है, जिसे पाकर हम अपने जीवन को ऊँचा बनाने के साथ परमात्मा में रमण करने लगते हैं। जब मानव मर्यादा में दृढ़ रहता है, उसका उत्थान अवश्य हो जाता है परन्तु जब मार्यादा तोड़ देता है तो उसके विनाश का समय आ जाता है। मानव के दो पक्ष होते हैं एक पुण्य उदय होने का दूसरा पाप उदय होने का। पाप और पुण्य हमारे अन्ताकरण में नियुक्त रहते हैं। जो मानव जैसा करता है वैसा भोगता है। जैसे आज हम भ्रमित हो दूसरो को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं, जो दूसरों को हानि पहुंचाते हैं उनकी स्वयं की हानि हो जाती है। इसी प्रकार स्वार्थ के वशीभूत दूसरों की निन्दा करते हैं दूसरों की त्रुटियाँ ग्रहण करता है यदि हम दूसरों की अच्छाइयों को ग्रहण करेंगे तो हमारे निकट अच्छाईयों का ढेर लग जायेगा हमारा पक्ष शुक्ल हो जायेगा, किन्तु जब हमारे हृदय में विद्या का, लक्ष्मी का प्रकाश हो जाये तब भी हमें अभिमान में नहीं आना चाहिए और अपने उस आपत्ति काल को भी विचारना चाहिए जो हम पर आ चुका था, जो माया में लिप्त हो जाता है वह अपने जीवन को सम्पत्ति को नष्ट कर देता है। जब स्वार्थ आ जाता है वह अपने जीवन की, सम्पत्ति को नष्ट कर देता है। उस समय धर्म मर्यादा समाप्त हो जाती है और जो मर्यादा में बन्धकर अपने कर्तव्य पर दृढ़ रहता है जब वेद का ज्ञान रहता है तत्व अन्धकार में नहीं जाता, वह महान जीवन जीते हुए मोक्ष प्राप्त करता है।

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..
तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 250/- तथा तीन बार की रु. 350/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत रोड, रोहतक (हरियाणा)

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

रजिस्ट्रेशन 1 मार्च से

प्रवेश परीक्षा 10 अप्रैल 25 अप्रैल एवं 10 मई

गुरुकुल भैयापुर लाढौत, रोहतक ने अत्यल्प काल में जो कीर्ति अर्जित की है, उससे गुरुकुल की शिक्षा एवं व्यवस्था का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। गुरुकुल के सुविशाल भव्य भवन दूर से ही दृष्टिगोचर होते हैं। विद्यालय भवन, छात्रावास, सभागार, भोजनालय तथा व्यायामशाला, यज्ञशाला आदि के पृथक-पृथक् रमणीय आधुनिक सुविधापूर्ण सुविशाल भवन यथाक्रम सुशोभित हैं। गुरुकुल के हरे पार्क, पार्कों की प्रवेशवीथिकाएं, तथा उनके उपद्वारों पर छायी लताओं के पुष्पगुच्छ पथिकों के मस्तक को चूमते-से प्रतीत होते हैं।

गुरुकुल में आपको प्रचीन तथा अर्वाचीन शिक्षा का अनुपम सामंजस्य देखने को मिलेगा। संस्था ने शिक्षा के साथ-साथ छात्रों के स्वास्थ्य और चरित्र-निर्माण में विशेष ख्याति अर्जित की है। अतएव प्रतिवर्ष प्रवेशार्थियों का दबाव बढ़ता जा रहा है। गत वर्ष आपकी संस्था को स्थानाभाव के कारण ५६८ प्रवेशार्थियों को लौटाना पड़ा । प्रवेश तथा व्यवस्था संबन्धी जानकारी निम्न है-

विशेषताएं :-

1. प्रविष्ट छात्रों का छात्रावास में रहना अनिवार्य।	5. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स।
2. 10+2 तक C.B.S.E. दिल्ली से मान्यता।	6. आधुनिक स्मार्ट क्लास की व्यवस्था।
3. प्रवेश हॉस्टल में रिक्त स्थानों पर निर्भर।	7. कम्प्यूटर व सभी विज्ञान प्रयोगशालाएं।
4. संध्या-हवन, योग-प्राणायाम, नैतिक शिक्षा, और नियमित दिनचर्या	8. 10+1, +2 में आर्ट एण्ड साइंस साइड।
	9. हिन्दी व अंग्रेजी मीडियम।

सम्पर्क सूत्र : 08607776897, 01262-217550

हार्दिक श्रद्धांजलि

आर्य नेता कैलाश नाथ सिंह दिवंगत

बनारस। आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के कई वर्ष तक प्रधान रहे पूर्व शिक्षामंत्री, सांसद तथा आर्य नेता कैलाश नाथ सिंह का लम्बी बीमारी के बाद उनके पैतृक गांव में 9 मार्च को रात्रि के 7 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन के समाचार से आर्यजगत में शोक की लहर दौड़ गयी। श्री सिंह का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री सिंह अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके निधन पर आर्यजगत तथा राजनीति से जुड़ी देश की विभिन्न हस्तियों ने गहन शोक जताया है। ज्ञातव्य है कि श्री सिंह सार्वदेशिक सभा, दिल्ली में स्वामी अग्निवेश के साथ महामंत्री भी थे तथा सभा का विवाद चल रहा था।हार्दिक श्रद्धांजलि।

डॉ. रामअवध शास्त्री नहीं रहे

अमरोहा। ललित निबन्धकार, प्रबुद्ध समालोचक तथा जे.एस. हिन्दू (पी.जी.) कालेज के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त रीडर व अध्यक्ष डॉ. रामअवध शास्त्री (65) का 5 मार्च को दिल्ली के आयुर्विज्ञान संस्थान में आकस्मिक निधन हो गया। डॉ. शास्त्री पिछले दो माह से रोगग्रस्त थे। बहुमुखी लेखिकीय प्रतिभा के धनी, शिक्षाविद व स्वतंत्र पत्रकार डॉ. शास्त्री का जन्म गाजीपुर जनपद के टांडा कस्बे में हुआ था। सन् 1970 में काशी विद्यापीठ से हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद सन् 1976 में पीएच.डी. की उपाधि से अलंकृत हुए। उन्होंने पत्रकारिता से अपने जीवन की शुरूआत की तथा 20 अगस्त सन् 1976 को अमरोहा के जे.एस. हिन्दू महाविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए।

आपने- कांस फूल गये, संदर्भ और समीक्षा, डायरी के उड़ते पृष्ठ, चिंतन के आयाम, ललित प्रवाह, बिखरी यादें, कामायनी सर्वेक्षण, निराला : व्यक्ति और कवि, राजकुमार और भालू आदि सहित लगभग दो दर्जन से भी अधिक पुस्तकों का लेखन व संपादन किया। अनेक मानद उपाधियों से विभूषित डॉ. शास्त्री की साहित्य जगत में ललित निबन्धकार के रूप में खासी पहचान रही है। उनके निर्देशन में दो दर्जन से भी अधिक शोधकार्य हो चुके हैं। ललित निबन्धकार डॉ. शास्त्री के निधन पर नगर व क्षेत्र के साहित्यिक, सामाजिक व राजनीतिक संगठनों ने गहन दुख जताते हुए इसे अपूर्णनीय क्षति कहा तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रभु से प्रार्थना की। हार्दिक श्रद्धांजलि।

आचार्य परमेश्वरन नाम्बूतिरी का निधन

केरल (के.एम. राजन)। आर्य जगत के वरिष्ठ विद्वान और लाहौर गुरुदत्त भवन आर्य गुरुकुल के पूर्व आचार्य कोज्हानेल्लूर परमेश्वरन नाम्बूतिरी (92) का निधन 24 जनवरी को हो गया। उनका जन्म 1921 में मालावार विद्रोह से कुछ महीने पहले केरल के पालाक्काड जिले में हुआ था। पढ़ने में अत्यंत रूचि होने के कारण वे अपने उपनयन संस्कार के बाद में आर्यसमाज के संपर्क में आये और लाहौर के गुरुदत्त भवन गुरुकुल में प्रवेश लिया। स्नातक होने के बाद वे उसी गुरुकुल में आचार्य के पद पर नियुक्त हुए। 1946-47 में भारत विभाजन बेला में हुए भीषण दंगों में इस गुरुकुल को विद्रोहियों ने आग लगा दी। गुरुकुल के जलते हुए पुस्तकालय से उन्होंने कुछ पुस्तकें अपने हाथ में ले लीं और वे अतिसाहसिक रूप में करांची के रास्ते मुम्बई होते केरल पहुंच गये।

केरल में वेद प्रचार के साथ विद्यालयों में हिन्दी के अध्यापक भी रहे। पंडित रघुनन्दन शर्मा के विख्यात ग्रन्थ 'वैदिक संपत्ति' का उन्होंने मलयालम भाषा में भाषान्तरण किया। इसके अलावा महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य और ऋग्वेद के कुछ सूक्त, सामवेद भाष्य पूर्ण और अथर्ववेद के कुछ कांड मलयालम में भाषांतरण किये। वैदिक विषय पर उन्होंने बहुत कुछ लिखा है। मलयालम के अलावा इंग्लिश, हिन्दी, संस्कृत, मराठी, गुजराती, पाली, पुस्तो, बलूची इत्यादि भाषाओं में भी वह विद्वान् थे। केरल में आर्यसमाज प्रचार में वे विशेष मार्ग दर्शक रहे। उनके निधन से आर्यजगत को गहरा धक्का लगा है। कोई पुरस्कार उन्हें आर्यजगत से उनके जीवन काल में नहीं मिला। वे पुरस्कार के पीछे जाने के इच्छुक भी नहीं थे। आर्यसमाज वेल्लिनेज्ही उनके वैदिक साहित्य को प्रकाशित करने की कोशिश में है, जो दान दाता इस महत्वपूर्ण कार्य में योगदान दे सकते हैं वे आर्यसमाज, पंडित लेखराम स्मृति भवन, वेल्लिनेज्ही (पो), केरल- 679504 या ई-मेल aryasamajvellinezhi@gmail.com पर संपर्क कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के १८९वें जन्मदिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित समारोह में केआयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य उत्तराखण्ड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी, सांसद जयप्रकाश मल्होत्रा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष माया प्रकाश त्यागी -केसरी।

ऋतुराज बसंत का अभिनंदन

अफजलगढ़ (बिजनौर)। आर्यसमाज मंदिर में ऋतुराज बसंत का अभिनंदन यज्ञ के माध्यम से किया गया। इस अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा डा. अशोक रस्तौगी ने अपने उदबोधन में कहा कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है, अतएव ऋतुएं भी परिवर्तित होती रहती हैं, किन्तु ऋतुओं के इए परिवर्तन का आनंद वही मानव उठा सकता है जो इन छह ऋतुओं के मध्य स्थापित सामंजस्य को समझकर अपने जीवन में परिवार में, समाज में, राष्ट्र में वैसा ही सामज्जस्य स्थापित करने की चेष्टा करें, मानसिक उल्लास व आल्हाद के भावों को व्यक्त करने वाला पर्व बसंत पंचमी हमें यही संदेश देती है। डॉ. रस्तौगी ने उपस्थित श्रद्धालुओं का आह्वान करते हुए कहा कि बसंत का यह मदमाता पर्व हमारे लिए पुष्पमाल लेकर आया है, किन्तु यह पुष्पमाल उन्हीं के कंठ की शोभा बनेगी जो इस पर्व पर पशुता से मानवता, अज्ञान से ज्ञान तथा अविवेक से विवेक की ओर बढ़ने का संकल्प लेंगे, जिन्होंने तप, त्याग, और अध्यवसाय से ज्ञान, बुद्धि, विवेक को प्राप्त किया है। यह ऋतु सम्राट उनका अभिनंदन करता है, उनकी श्रेष्ठता का सम्मान करता है, श्रेष्ठता का सम्मान करने वाला भी श्रेष्ठ है। इसलिए आईये! हम बसंत पंचमी के इस पावन व शुभ पर्व पर उत्तम मार्ग का वरण करें। प्रकृति की परिवर्तनशीलता व शरीर की नश्करता की दृष्टिगत करते हुए प्रकृति की अनुपम देनों व उपलब्धियों का आलिंगन करें, राष्ट्र में एक सात्विक व निर्मल वातावरण बनाने में सहयोग दें। यज्ञ के ब्रह्मा ने यज्ञोपरांत वीर हकीकत राय को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि बसंत पंचमी को शहीद दिवस के रुप में भी मनाया जाता है, क्योंकि वीर हकीकत राय का अपने धर्म के लिए उत्सर्ग इसी दिन हुआ था। बसंतोत्सव यज्ञ में सुरेशपाल आर्य, चौ. चरण सिंह, अरुण विश्नोई, पूरण सिंह, रिशव, शुभव विश्नोई, महीपाल सिंह, ज्ञान सिंह तोमर, ठाकुर सतीश आर्य, जयवती देवी आदि का सहयोग रहा।

धूमधाम से मनाया मकर संक्रांति पर्व

मंत्री तुलसीराम आर्य
भटिंडा (पंजाब)।

मकर संकृांति पर्व पर वेद मंत्रों द्वारा यज्ञ किया गया और देश की शांति की प्रार्थना ईश्वर से की गयी। रामा मंडी स्थित गुरुदत्त भवन में लाला जगननाथ सिंगला एवं सतीश कुमार आर्य संगपुरा सिंगला परिवार द्वारा यज्ञानि में वेद मंत्रों द्वारा आहुतियां दिलवाईं। इस अवसर पर बच्चों ने भजन प्रस्तुत किये। यज्ञ सत्संग में पहुंचे वीरेन्द्र, विजय कुमार, मास्टर शक्तिप्रकाश, रवि शर्मा आदि शामिल रहे।

स्वामी दयानंद विदेह द्वारा वेद योग प्रचार

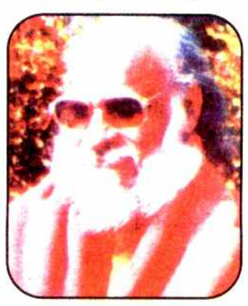

चास (बोकारो)। ओम साधना मंडल के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी दयानंद विदेह की प्रेरणा से प्रति वर्ष वेद यज्ञ योग का प्रचार बोकारों में १९८६ से हो रहा है। आर्यसमाज बोकारो स्टील सिटी के कार्यक्रम से प्रभावित होकर नवल किशोर प्रसाद प्रतिवर्ष वैदिक सत्संग करा रहे हैं, जिसमें स्वामी जी वेद मंत्रों के माध्यम से जीवन जीने की कला सिखाते हैं। अंधविश्वास, पाखंड, जादू टोना, भूत प्रेत आदि रुढ़िवादी परंपराओं से बचने का मार्गदर्शन करते हैं। स्वामी जी संस्कृति की ओर ले जाने तथा उसकी रक्षा करने का संकल्प दिलवाते हैं। वे वेद की सरल व्याख्या करते हुए हँसते -हँसते तनाव रहित जीवन बिताने का मार्ग बताते हैं।

प्रवेश सूचना

आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय-विभाग हरिद्वार में सत्र 2013-14 हेतु कक्षा 01 से 09 व 11 तक प्रवेश प्रारम्भ। वैदिक संस्कारों पर आधारित एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम सभी आधुनिक विषयों के साथ छात्रों के सर्वांगीण विकास की शिक्षण संस्था। विज्ञान वर्ग में P.C.M. एवं P.C.B. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम।

प्रवेश तिथि- 07 अप्रैल 2013 दिन रविवार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें- जयप्रकाश विद्यालंकार (सहा. मुख्याधिष्ठाता)
सम्पर्क सूत्र- 9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378
वेबसाइट : www.gurukulkangrividyalaya.org
विद्यालय-विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)-249404

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक', विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र, यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई, डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी, इशरत अली, राहुल त्यागी
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-
आर्यावर्त केसरी
मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित। ☎: 05922-262033, 9412139333 फैक्स: 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
e-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com